ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -26 | जनवरी - II - 2024 | अंक - 20 | माउण्ट आबू | Rs.-12

जन जागृति लाने का काम केवल अध्यात्म ही कर सकता है : राज्यपाल

टैगोर थिएटर में मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल ने किया नशा मुक्ति अभियान का शुभारंभ

नशा मुक्ति अभियान रथ को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए राज्यपाल, महापौर, डॉ. बनारसी लाल शाह तथा अन्य।

चंडीगढ़-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा टैगोर थिएटर में नशा मुक्ति अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में पंजाब के राज्यपाल व चंडीगढ़ के प्रशासक बनवारी लाल पुरोहित ने मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होकर नशा मुक्ति अभियान का शुभारंभ किया।

कार्यक्रम में बनवारी लाल पुरोहित ने अध्यात्म की महत्ता पर ज़ोर देते हुए कहा कि समाज में नशे को रोकने के लिए कानून, पुलिस और बॉर्डर पर बीएसएफ सभी अपना काम तत्परता से कर रहे हैं लेकिन जन-जन में जागृति लाने का काम केवल अध्यात्म ही कर सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था जिसकी सेवाएं जन कल्याण के लिए समर्पित हैं, आज इस संस्था के भाई-बहन सभी ऋषि-मुनियों के समान हैं जो समाज में जागृति ला रहे हैं और आगे भी लाते रहेंगे। ये भगवान के दूत जब लोगों को शिक्षा देंगे तो उसका असर होगा ही।

राज्यपाल ने कहा कि भगवद्गीता को सभी स्मृतियों, पुराणों और वेदों से ऊपर बताया गया है क्योंकि गीता स्वयं भगवान के श्रीमुख से निकली हुई शिक्षा है और उसे भगवान ने मानव हित के लिए समर्पित किया है। इस संस्था ने धर्म की जड़ को संभाल रखा है। धर्म को सींचने का काम ये संस्था बखूबी कर रही है। जैसे गेहूं में से कंकड़ को साफ किया जाता है वैसे ही ये संस्था समाज के गलत तत्वों को ठीक करने में अग्रणी है। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था को उनकी सेवाओं के लिए बधाई दी और समाज उत्थान में सदा अपना साथ देने की बात कही। जयपुर से आईं राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी ने 'ब्लिसफुल लाइफ थ्रू द आर्ट ऑफ पॉज़िटिव चेंज' विषय पर अपने वक्तव्य में सदा शुभ भावना रखने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि सदा कल्याणकारी सोच ही पुण्य है। नफ़रत किसी इंसान का संकल्प नहीं होना चाहिए। शुभ भावना से धर्म हमेशा रक्षा करता है। चिंतन को बदलना है और उसके लिए राजयोग ध्यान सबसे सरल और सुंदर मार्ग है। इसके अलावा मंच पर संस्थान के नॉर्थ ज़ोन की निदेशक राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी और राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी, संस्थान के मेडिकल विंग के सेक्रेट्री ब्र.कु. बनारसी लाल शाह भी उपस्थित रहे और जनसमूह को सम्बोधित किया। मंच का संचालन ब्र.कु. अनीता दीदी ने किया।

ब्रह्माकुमारीज़ नॉर्थ ज़ोन के पूर्व निदेशक राजयोगी ब्र.कु. अमीर चंद भाई के तीसरे स्मृति दिवस पर हुआ कार्यक्रम का आयोजन

पंजाब के राज्यपाल पुरोहित एवं चंडीगढ़ के महापौर अनूप गुप्ता ने नशा मुक्त भारत अभियान की सेवाओं के लिए तैयार किए गए रथ का किया उद्घाटन

राज्यपाल ने कहा... ये भगवान के दूत जब लोगों को शिक्षा देंगे तो उसका असर होगा ही

अभियान का उद्देश्य राज्य को नशा मुक्ति की ओर ले जाना है

जोर बाग में 'नये कल की परिकल्पना' विषय पर पब्लिक प्रोग्राम

विपरित परिस्थितियों में स्वस्थिति को संतुलित रखें

दिल्ली-लोधी रोड। जोर बाग के सामुदायिक केन्द्र में 'नये कल की परिकल्पना' विषय पर सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय तथा अन्य लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में एस.एन. घोरमडे,पूर्व उपाध्यक्ष, भारतीय नौसेना,नई दिल्ली ने कहा कि ओम का अर्थ है मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ। परिस्थिति कैसी भी हो लेकिन मुझे स्वस्थिति को संतुलित रखना है। बीती हुई बातों पर जब बिंदी लगाते हैं तो आगे का मार्ग स्वतः प्रशस्त होता है। जब वर्तमान अच्छा हो तो भविष्य तो स्वतः ही श्रेष्ठ हो जाता है। ब्र.कु. पीयूष भाई, अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता,नई दिल्ली ने कहा कि हर चीज़ की शुरुआत हमारे मन से होती है। हम यहाँ होते हैं और हमारा मन कहीं और होता है। अगर वर्तमान में रहें तो चेहरे पर स्वतः खुशी आ जाती है। तो सकारात्मकता का शुभारंभ हमें आज, अभी, इसी पल से करना है। यदि मैं अपने नज़रिये का परिवर्तन कर दूं तो अवश्य ही मेरे लिए नया कल आयेगा। ब्र.कु. विद्या दीदी,राष्ट्रीय संयोजिका, न्यायविद प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़, बेलगावी, कर्नाटक ने कहा कि स्वयं का परिवर्तन ही परिस्थिति को बदल सकता है। हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना है, स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन संभव है। तो सकारात्मक परिवर्तन कैसे लाएं, यह जाग्रति हममें आध्यात्मिकता से ही आ सकती है। ब्र.कु. गिरिजा दीदी,संचालिका,लोधी रोड सेवाकेंद्र ने कहा कि नए कल की परिकल्पना के लिए हमें वर्तमान को सफल कर भविष्य को बनाना है। भूतकाल की बातों से सीखना मना नहीं लेकिन बढ़ना तो हमें आगे है। तो जब हम वर्तमान को सफल करते हैं तो आने वाला कल अच्छा भी होता और नया भी।

जब हम वर्तमान को सफल करते हैं तो आने वाला कल अच्छा भी होता है और नया भी : ब्र.कु. गिरिजा दीदी

यहाँ हर आत्मा को परमात्म अनुभूति और अपने सच्चे स्वरूप की अनुभूति होगी

- **शिव सरोवर मेडिटेशन ट्रेनिंग सेंटर का हुआ भूमिपूजन**
- **राजयोगिनी बहनों का स्वागत एवं सम्मान नगरी सेवाकेन्द्र के बाल कलाकारों ने बस्तरिया लोक नृत्य एवं छत्तीसगढ़ी नृत्य द्वारा किया**
- **स्वागत रैली के साथ बहनों का माला एवं तिलक से अभिनंदन कर पूजन स्थल तक ससम्मान लाया गया**

धमतरी-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा वंदना विहार कॉलोनी में शिव सरोवर मेडिटेशन ट्रेनिंग सेंटर का भव्य भूमि पूजन समारोह हुआ। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विधायक श्रीमती रंजना साहू ने कहा कि इस संस्था ने आध्यात्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को जोड़ कर रखा है। विजय देवांगन,महापौर नगर पालिका निगम धमतरी ने कहा कि शिव सरोवर से यहां के लोग धर्म और अध्यात्म से जुड़ेंगे। पूर्व विधायक गुरुमुख सिंह होरा ने कहा कि इस संस्था से जुड़ना लोग अपना सौभाग्य समझते हैं। मोहन लालवानी, दिव्यांगजन सलाहकार बोर्ड छ.ग. ने कहा कि इस भवन के निर्माण से लोगों को आत्मशांति सहज मिलेगी। दीपक लखोटिया,प्रखर समाचार पत्र एवं टीवी के संपादक ने कहा कि इस भवन की नींव पूरे विश्वास पर डली है। रामू रोहरा,प्रदेश मंत्री भारतीय जनता पार्टी ने कहा कि यहाँ शिव सरोवर का बनना धमतरी के सौभाग्य की बात है। राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका,इंदौर ज़ोन ने कहा कि यहां आने वाली हर एक आत्मा को परमात्म अनुभूति और अपने सच्चे स्वरूप की अनुभूति होगी। ब्र.कु. आशा दीदी,संचालिका भिलाई क्षेत्र ने कहा कि शिव सरोवर अर्थात् गागर में सागर, स्वयं परमात्मा इस सरोवर में समा गया है। ब्र.कु. सविता दीदी,संचालिका रायपुर क्षेत्र ने कहा कि यह स्थान सारे शहर ही नहीं लेकिन पूरे विश्व के लिए लाइट हाउस बनकर परमात्म मिलन का मार्ग प्रशस्त करेगा। ब्र.कु. पुष्पा दीदी,संचालिका राजनांदगांव क्षेत्र ने कहा कि यहां सभी को सौभाग्य,समृद्धि और सुख शांति प्राप्त होगी। ब्र.कु. सरिता दीदी,धमतरी ने सभी अतिथियों सहित आमंत्रित जनों का अभिनंदन करते हुए शिव सरोवर निर्माण के उद्देश्य से अवगत कराया और सभी का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम का सफल संचालन ब्र.कु.प्राजक्ता दीदी ने किया।

संकल्प शक्ति को जानें,पहचानें...

संकल्प को कोई साधारण बात मत समझिये। आप समझते हैं संकल्प उठा, उसको दबा दिया। संकल्प चला, उसको मुख में लाकर वर्णन किया। संकल्प चला, हमने कर्म में लाकर कोई नुकसान कर दिया, किसी को दुःख दे दिया। तो ये संकल्प से जो हम कार्य करते रहते हैं, ये हमारे साधारण, लौकिक, विकारयुक्त संकल्प हैं। सारे दिनभर में जितने संकल्प हम करते हैं, उठते-बैठते संकल्प से ही तो हैं। हमारी सारी मूवमेंट संकल्प से ही तो होती है। अगर हम संकल्प पर, उसकी गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देंगे तो हम महानता की ओर कैसे आगे बढ़ेंगे! जहाँ हम हैं वहां से आगे बढ़ना, ये संकल्प से ही होता है। आगे बढ़ना या पीछे, ये सीढ़ी उतरने और चढ़ने की जो है, ये संकल्प ही है। तो क्या आप उसको इतना महत्त्व देते हैं या उसको ऐसे ही खर्च कर देते हैं?

एक व्यक्ति किसी धनवान घराने से सम्बंधित था। उसको अपने माता-पिता से बहुत सम्पत्ति मिली थी। उस सम्पत्ति के नशे में वो सिगरेट पीता था। वो जो सिगरेट पीता था, उसके ऊपर दस रुपये का नोट लपेटकर पीता था। जो उसके पास बैठे होते थे, वे हैरान होते थे कि दुनिया में कितने गरीब हैं, भारत में गरीबी से लोग मर रहे हैं, खाने के लिए नहीं है उनके पास, और ये व्यक्ति दस रुपये का नोट सिगरेट पर लपेटकर पीता है! लेकिन वो व्यक्ति इसमें अपनी शान समझता था कि पैसे की क्या बात है, मेरे पास तो बहुत धन है। तो कहीं शायद हम लोग भी उसी अपने उल्टे नशे में, देह अभिमान के नशे में जो संकल्प रूपी धन है, अनमोल धन है, इस संकल्प रूपी धन से हम कहां पहुंच सकते हैं! आप सोचिये तो सही! कितनी महान हमारी स्थिति हो सकती है! लेकिन हम भी उस संकल्प रूपी धन को, जैसे वो सिगरेट के ऊपर दस का नोट लपेटकर पीता था, वैसा ही हमारा हाल है। संकल्पों को गंवाते हैं तो हम संकल्प के महत्त्व को नहीं जानते हैं। कोई भी नज़रिया संकल्प की ही रचना है। एक दिन में नज़रिया नहीं बनता। कई बार किसी चीज़ के लिए जो संकल्प हम बार-बार दोहराते हैं वो हमारा नज़रिया, दृष्टिकोण या वृत्ति कहलाता है। हमारे संकल्प बदलते रहते हैं। कभी शुद्ध, कभी अशुद्ध। कभी शरीर से सम्बंधित, कभी व्यक्ति के मूल स्वरूप 'आत्मा' से सम्बंधित। कभी योगयुक्त, तो कभी योगभ्रष्ट हमारे संकल्प रहते हैं।

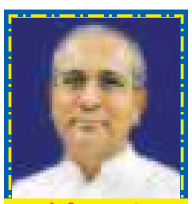

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

कोई व्यक्ति अगर पाँच कदम आगे बढ़े और दस कदम वापस लौट आये, तो उसने प्रगति की या अवनति की? आप कहेंगे कि अवनति की, क्योंकि वो बढ़ा तो पाँच कदम और वापस लौट आया दस कदम। तो आगे क्या बढ़ा वो! ऐसे ही अगर हमने ट्राफिक कंट्रोल के टाइम, योग के टाइम कुछ अच्छे संकल्प किये, हमारी वृत्ति अच्छी रही और बाकी समय में अगर हमारी वृत्ति खराब रही माना हम वापस लौट आये तो जितना फासला हमने योग के दौरान तय किया था, उससे अगर हम ज़्यादा समय योग-स्थिति के अलावा रहे तो हम नीचे आये, पीछे चले आये। अन्य कार्यों के लिए तो हम ज़्यादा समय खर्च करते हैं लेकिन योग के लिए कम। योग के समय कुछ टाइम तो स्थिर रहने के लिए ही हमने लगा दिया। और जब स्थिर होकर ठीक होने लगे तो समय समाप्त हो गया। उसके बाद हम दिन भर में लोगों के अवगुण नोट करते रहे। उनसे हमारा श्रेष्ठ व्यवहार नहीं रहा। हम तो चाहते हैं कि हमारी वृत्ति सर्वोत्तम, सतोप्रधान जैसे देवी देवताओं की होती है वैसी ही हो। बिल्कुल निर्मल वृत्ति चित्त की हो। हर्षितचित्त की वृत्ति हो, संतुष्टता के चित्त की वृत्ति हो। संतुष्ट, निर्मल और हर्षित हो। ये तीनों गुण अगर हममें हो, तो वो वृत्ति कैसी होगी! वो सबसे प्रेम की वृत्ति होगी। और हम सबकी जो वृत्ति है वो तो अप एंड डाउन, अप एंड डाउन। जैसे किसी को थर्मामीटर लगाओ, नर्स देखती है बार-बार, या ब्लड प्रेशर चेक करो, तो कभी अप कभी डाउन, कभी अप कभी डाउन, तो ऐसी ही व्यक्ति की स्थिति होगी। कभी अप, कभी डाउन। तो उसकी दिन भर में क्या प्रोग्रेस रही? क्या कहेंगे? नहीं ना। तो संकल्प हमारा धन है, खज़ाना है, शक्ति है, उसके महत्त्व को समझें और जितना महत्त्व देंगे, उतना ही हम आगे बढ़ेंगे, प्रोग्रेस होगी, सफल होंगे। और जीवन में संतुष्टता भी संकल्प को महत्त्व देने से ही रहेगी।

कहावत भी है ना सहज मिले सो दूध बराबर...

हम विश्व की सेवा पर उपस्थित हैं। भक्त कहेंगे- हे भगवान मेरी तकदीर अच्छी करना, हम कहते अच्छे से अच्छी, महान से महान, सृष्टि को रोशन करने वाली तकदीर बाबा ने हमारी जगा दी है।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

प्यारे बाबा के हम सभी कल्प के बिछुड़े हुए बच्चे अपने घर में बैठे हैं। कहा जाता - दिन का सोया रात को वापस आ जाए तो उसको खोया हुआ नहीं कहेंगे। यह कहावत भी हमारी ही है। हम बाप को भूले तो आधाकल्प खो गये। माया की गोदी में पहुंच गये। माया ने हमें गले तक पकड़ रखा है। जैसे कहते हैं सोने में खाद पड़ती, ऐसे मुझ सोने में तमोप्रधानता की खाद पड़ गई थी। बाबा ने आकर के हमें फिर से ज्ञान-योग की भट्ठी में डाला है और खाद निकाल सच्चा सोना बनाया है। हम जो माया के पास खो गये थे, बाबा ने अब इस संगम पर हम खोये हुए बच्चों को फिर से गोदी में बिठाया है और वापस अपने घर ले चल रहा है, इसलिए बाबा हमें मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे कहता। हम बाबा के बहुत प्यारे बच्चे हैं, जिन्हें स्वयं बाप ने पाला है। वैसे भी कोई गुणवान आत्मा होती है तो सभी को प्यारी होती, उसके लिए कहते इसे तो स्वयं भगवान ने बैठकर बनाया है। गुणों की सुन्दरता को देख कहते हैं इसे तो भगवान ने खास बनाया है। तो हम सभी को स्वयं भगवान ने खास बनाया है। कैसे बनाया, हमारा भाग्य विधाता हमारे तकदीर की लकीरें खींच रहा है इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य विधाता की महिमा गानी है। स्वयं भगवान ने स्पेशल हमारे ललाट पर भाग्य की लकीरें खींची हैं, तब तो हम कहते स्वयं भाग्य-विधाता हमारी तकदीर की लकीरें खींच रहा है इसलिए हमें अपने भाग्य का गुणगान करना है। भाग्य विधाता की महिमा गानी है। भाग्य विधाता ने घृत डाल हमारा दीवा जगाया है इसलिए जब कोई पूछते क्या तुम्हें निश्चय है कि हमको भगवान पढ़ाते हैं? तो हम कहते क्या इसमें भी कोई संशय की बात है। अगर कोई पूछते हैं तो माना संशय है। उनके तकदीर की लकीरें अभी तक खींची हुई नहीं हैं।

हम तकदीर जगाकर आये हैं, जगाने की मेहनत नहीं करते। हमारी तकदीर जगी हुई है। हम विश्व की सेवा पर उपस्थित हैं। भक्त कहेंगे- हे भगवान मेरी तकदीर अच्छी करना, हम कहते अच्छे से अच्छी, महान से महान, सृष्टि को रोशन करने वाली तकदीर बाबा ने हमारी जगा दी है। ब्राह्मण अगर कहें बाबा हमारी तकदीर जगाकर रखना तो यह संशय है। बाबा हमें मदद करते रहना, क्या बाबा हमें देता नहीं जो मैं मांगती। कहावत भी है सहज मिले सो दूध बराबर... बाबा ने हमारी दूध बराबर तकदीर बनाई। हम मांगकर उस दूध को पानी क्यों बनाते! दृढ़ निश्चय वाले कभी कुछ मांग नहीं सकते। वह तो ओहो! बाबा वाह बाबा के गीत गायेंगे।

बाबा कहते मैं रोज़ अमृतवेले बच्चों के नाज़ों का खेल देखता हूँ क्योंकि बच्चे अभी तक बहुत नाज़-नखरे करते हैं, स्वयं को नीचे बिठाते और बाबा को बहुत ऊंचाई पर देखते हैं तभी दूरी का अनुभव होता है। मैं तो बाबा को अपने साथ बिठाती हूँ, मैं बाबा के समान बनकर साथ में बैठ जाती। ऐसे नहीं बाबा आप तो अर्श पर हैं, मैं फर्श पर हूँ। यह इतनी दूरी भी क्यों। दूर रहेंगे तो धरनी की धूल आकर्षण करेगी। जब बाबा ने हमें पवन पूत बनाकर उड़ना सिखाया फिर हम धूल में क्यों खेलते! इतनी दूरी क्यों? समान बनकर बाबा के साथ क्यों नहीं बैठ जाते!

हम हैं बाबा की सच्ची-सच्ची परियां। हमारी बुद्धि धरनी पर क्यों। हम तो धरनी के सितारे हैं, हम जग को रोशन करने वाले हैं। ऐसे रोज़ अमृतवेले अपनी मस्ती की छाप लगाओ फिर कभी नहीं कहना पड़ेगा कि बाबा हमारी तकदीर जगा दो। बाबा ने हमें चोटी से पकड़कर निकाला और अपने साथ गद्दी पर बिठाया।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बुद्धि में एक बाबा ही बाबा रहेगा तो सारा अटेन्शन एक बाबा की तरफ ही रहेगा

ओम शांति शब्द यह भी एक शिव मंत्र है, क्योंकि कोई भी समस्या आ जाती है तो ओम शान्ति के महामंत्र से सहज पार कर लेते हैं क्योंकि अभी समय तो कलियुग के अन्त का चल रहा है तो ऐसे समय अगर ओम शान्ति का महामंत्र अर्थ से याद करेंगे तो सहज समाधान मिल जायेगा। एक होता है मंत्र की रीति से कहना, दूसरा होता है अर्थ में टिकना। तो ओम शान्ति में तीन बातें आती हैं - एक तो मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। दूसरी बात मुझ आत्मा का बाप शान्ति का सागर है, शान्ति का दाता है और तीसरी बात हम आत्माओं का घर मुक्तिधाम कहो तो ओम शान्ति अर्थ से सोचें तो शान्त स्वरूप हो जायेंगे क्योंकि आत्मा भी शान्त, बाप भी शान्त और घर भी हमारा शान्तिधाम। सोचना अलग चीज़ है लेकिन स्वरूप बनना और चीज़ है।

तो आजकल बाबा यही हम सब बच्चों को इशारा दे रहा है कि अब समय की रफ्तार तेज है, तो समय प्रमाण पुरूषार्थ की रफ्तार भी तेज है? जो बाबा कहता है सेकण्ड में मन का कन्ट्रोल हो जाये, जब चाहें जहाँ चाहें वहाँ मन उसी तरफ लग जाये। मनमनाभव का मंत्र जो है वो हमें बाबा फिर से याद दिला रहा है कि मन कन्ट्रोल में है? मेडिटेशन का मतलब भी है मन को परमात्मा के तरफ लगाओ तो मन व्यर्थ संकल्प नहीं करेगा, मन यहाँ-वहाँ भागेगा नहीं, बाबा के पास बाबा की याद में रहेगा, यही तो योग है यही मनमनाभव है। तो चेक करो बाबा की हम बच्चों में जो शुभ आशा है कि मेरा एक-एक बच्चा राजा बन जाये, अगर मन के वश है तो राजा तो नहीं कहेंग। स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी बाबा हमें बनाना चाहता है। इसके लिए ब्रह्मा बाबा ने भी कितना पुरूषार्थ करके अटेन्शन दिया है अपने ऊपर तब जाके ऐसा बनें। तो अभी अच्छी तरह से अपने मन को ऑर्डर प्रमाण रख, समय की रफ्तार प्रमाण तीव्र पुरूषार्थ करना है।

हम कर्मयोगी हैं तो कर्म करते भी परमात्मा की याद हो, क्योंकि परमात्मा की याद में कर्म करने से उनकी शक्ति मिलने से वो कर्म और ही श्रेष्ठ हो जाता है। तो खाते-पीते, चलते-फिरते मैं आत्मा इस शरीर से न्यारी हूँ, यह स्मृति स्वरूप है या नहीं, यह हमें ही चेकिंग करनी होगी। शरीर का भान खींचे नहीं, मन के ऊपर अधिकार हो। मनजीत, जगतजीत कहा जाता है। तो इतना कन्ट्रोल हमारा इन स्थूल कर्मेन्द्रियों के साथ सूक्ष्म मन, बुद्धि और संस्कार के ऊपर हो। बाबा कहते अभी इस पुरूषार्थ की गति को फास्ट करो। चल रहे हैं, कर रहे हैं, यह तो ठीक है परन्तु समय के प्रमाण अभी अपनी गति को चेक करना है कि चल रहे हैं या उड़ रहे हैं? उड़ने के समय अगर कोई चले तो पहुंचेंगे कब? इसलिए बाबा कहता है अपने ऊपर अटेन्शन को भी अण्डरलाइन करो तब समान बन साथ चल सकेंगे।

यहाँ मधुबन में आते भी इसीलिए हैं कि हम स्वयं को रिफ्रेश कर बाबा समान बनने के पुरूषार्थ की गति को तीव्र बनावें क्योंकि यहाँ वायुमण्डल की बहुत मदद है इसलिए यहाँ जो जितनी कमाई करना चाहो उतनी कर सकते हो यानी थोड़े दिन में पुरूषार्थ ज़्यादा कर सकते हो, इसके लिए एक-एक सेकण्ड को सफल करते जाओ। और जब बुद्धि में एक बाबा ही बाबा रहेगा तो सारा ही अटेन्शन एक बाबा की तरफ ही रहेगा तो टेन्शन भी खत्म हो जायेगा, अटेन्शन में प्राप्ति हो जायेगी। तो बाबा का हम बच्चों से कितना प्यार है जो सब बातें सहज कर रहे हैं क्योंकि पीछे आने वालों को तो बहुत कम टाइम है लेकिन बाबा का वरदान भी है कि कोई न कोई लास्ट सो फास्ट जायेंगे। हमारी हर एक्टिविटी सबको एक बाबा के तरफ ही अटेन्शन दिलाये, उसके लिए कितना हमको पुरूषार्थ करना होगा। सोचो, क्योंकि हमने भगवान को जाना, माना और उनके बच्चे भी हैं तो इतना बाबा का हमें प्यार मिला, इतनी बाबा से शिक्षायें मिल रही हैं, उससे हमारा चेहरा कभी चिंतन में, कभी चिंता में, कभी टेन्शन में ऐसा चेहरा नहीं होना चाहिए।

ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी माना खिला हुआ रूहानी गुलाब, ऐसा चेहरा हो। चलते-फिरते हम खिले हुए गुलाब लगें, फरिश्ते लगें, ऐसा देखके कोई भी सोचेगा कि यह क्या है, यह कौन है? ऐसे अपने चेहरे और चलन से सेवा करने का चांस तो सभी को है। तो ऐसे अपना पुरुषार्थ करना, जैसे हमारा मन बाबा के साथ उड़ रहा हो।

संगमयुग पर हम ईश्वरीय गुण धारण करते हैं, सतयुग में दैवी गुण होंगे। द्वापर के बाद गुण-अवगुण मिक्स होंगे। अवगुण भी आ जायेंगे। परन्तु अभी हमें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

याद के बल से पुरानी बातें भूल जायेंगी, देहधारियों का लगाव छूट जायेगा

ईश्वरीय गुण धारण करने के लिए बाबा पढ़ा रहा है। कैसा हमारा सतगुरू है। गुरू तो हज़ारों-लाखों हैं। गुरुओं की कितनी महिमा करते हैं, पर सतगुरू एक है। हम किसी गुरू के चेले नहीं हैं। सतगुरू एक है, वो कहता है मामेकम याद करो। यह मंत्र है, मनमनाभव। मन से मुझ एक को ही याद करो या एक के होकर रहो तभी बाप के गुण खींच सकेंगे। गुणों को धारणा की शक्ति से खींच लेंगे। फिर बाप वर्से में क्या देगा? मुक्ति जीवन मुक्ति। पहले गुणों को धारण करना होगा, सिर्फ याद करेंगे तो फरियाद नहीं होगी। याद का बल अलग है, पुरानी बातें भूल जायेंगी। याद से और देहधारियों का लगाव छूट जायेगा। संकल्प, वाणी, कर्म पर ध्यान रहेगा। जिसकी याद आती है उसका नाम भी याद आयेगा, रूप भी याद आयेगा।

चढ़ती कला, तेरे भाने सर्व का भला। जिस बच्चे की चढ़ती कला, उस निमित्त बने हुए के साथ अनेकों का भला। याद में देखना है मेरा तो कल्याण हुआ, मेरे निमित्त कितनों का भला हुआ क्योंकि राजाई हमने गंवाई है, बाबा न राजाई करता, न गंवाता है। अभी आसुरी गुणों को खत्म करने के लिए, दैवी गुण सम्पन्न बनने के लिए ईश्वरीय गुण चाहिए। ईश्वरीय गुणों से फिर शक्ति आयेगी।

बुद्धि स्वच्छ बनने से ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर को स्वयं में समाने की शक्ति आ गई। सागर बाबा है, हमको पतित पावनी गंगा बनाता है। गंगा निकली भागीरथ के मस्तक से। पावन बनते जाओ और बनाते जाओ। ऐसे नहीं पहले पावन बनें फिर बनायें, समय थोड़ा है। संकल्प, वाणी, कर्म, सम्बन्ध, इसमें कमाई जमा हुई या गंवाया? गंवाते हैं तो अपना ही खर्च नहीं चला सकते हैं। कमाते भी जाओ, दान भी करते जाओ। इतनी कमाई हो जो सारा परिवार सुखी हो, भविष्य की प्रालब्ध ऊंची हो। भविष्य के लिए फिकर न करनी पड़े।

नई दिल्ली। राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उन्हें गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ नागपुर महाराष्ट्र की उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी। साथ हैं ब्र.कु. मनीषा दीदी, ग्रेव्हीटस फाउंडेशन की उपाध्यक्ष उषा ताई काकडे, ब्र.कु. संजय भाई,माउण्ट आबू, ब्र.कु. डॉ. लीना दीदी,माउण्ट आबू तथा डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके।

भोपाल-म.प्र.। नवनिर्वाचित माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को शॉल ओढ़ाकर ब्रह्माकुमारीज़ के सुख शांति भवन सेवाकेन्द्र की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. नीता दीदी ने सम्मानित किया एवं ईश्वरीय प्रसाद दिया। साथ ही उन्होंने मुख्यमंत्री को ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराते हुए सेवाकेन्द्र में आने का निमंत्रण दिया। इस मौके पर ब्र.कु. आराधना बहन, ब्र.कु. दुर्गा बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

अनुभव

मैंने जो परमात्मा के बारे में पढ़ा व सुना... वो इन नज़रों से देखा

बाबा शिक्षा भी देता तो संरक्षण भी करता

गतांक से आगे...

मैं जब नहा-धोकर, तैयार होकर बाबा से मिलने आया, बाबा बैठे थे, कुछ कर रहे थे। मैं बाबा के पास जाकर बैठा, बाबा कहते हैं आज की मुरली सुनी, बहुत वन्डरफुल थी। बाबा ने कहा देखो श्रीकृष्ण जैसा आजतक दुनिया में कोई नहीं हुआ। क्या कमी थी उसमें, उसका नाम ही सुन्दर। अत्यन्त सुन्दर था वो और उसको हर चीज़ प्राप्त थी। फिर भी गीता में लिखा हुआ है कि जब भगवान साधारण तन में आते हैं और जो मूढ़मति लोग हैं वो, एक्सप्लेन करने का तरीका ये था, बाबा बता ऐसे रहे थे कि वो शिव बाबा के लिए ही कह रहे हैं, शिव बाबा ने कितना ये अनमोल ज्ञान दिया। नैचुरल वे में हर बात बाबा के मुख से ऐसे निकलती थी। शिव बाबा के बारे में इशारा हमेशा बाबा देते थे। तो बाबा की बात से मुझे लगा कि देखो बाबा... बाबा... याद है।

लेकिन बाबा ने कहा देखो श्रीकृष्ण को भी श्रीकृष्ण बनाने वाला कौन था? नर से नारायण उसको किसने बनाया? ये लोगों को नहीं मालूम। बच्चे ये तुम्हें बताना है। ये बाबा ने मुझे कहा, ये तुम्हें बताना है। जैसे बाबा को पहले साक्षात्कार हुआ और वो शिव बाबा आये, कमरे में लाइट भी और बाबा को नयी सृष्टि का साक्षात्कार हुआ तो मुझे बाबा ने कहा कि ये तुम्हें बताना है। मेरे तो कपाट खुल गये कि ये मुझे बताना है! फिर बाबा ने मुझे कहा कि और कितनी बातें बतानी हैं बच्चे, क्योंकि लोगों को पता नहीं है ज्ञान का बिल्कुल। देखो ना, भगवती सीता उसको कोई अंगुली भी नहीं लगा सकता, बुरी दृष्टि से देख भी नहीं सकता और उस भगवती सीता के लिए कहते हैं उसको चुराया रावण ने। तो ये कितनी गलत बातें कहते हैं, बच्चे ये सब बताना है। ऐसे बताते गए बाबा। मैं कोई डायरी, पेन्सिल तो लेकर बैठा नहीं, डायरी पेन्सिल आजतक भी मैंने रखी नहीं। बुद्धि रूपी डायरी में ही लिखता हूँ, सीधा डायरेक्ट। तो सुन रहा था मैं, जब ये सारी बातें लोगों को कहोगे तो लाठियां मारेंगे लोग लाठियां। साथ में ये कह दिया। तुम कहोगे राम की सीता नहीं

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

चुराई गई खुश नहीं होंगे, कहेंगे कि अच्छा कैसे आप कहते हो? ये तो अच्छी बात है अगर ऐसा नहीं हुआ, ऐसे नहीं, कहेंगे कि तुम हमारे शास्त्र का खंडन करते हो। अरे ऋषि-मुनि, वालमीकि जैसे रामायण लिख गए, संत

> ये स्वयं सत्य, सत्यस्वरूप है और सत्य को जानना ये भी एक बात है। लेकिन सत्य को कह पाना ये और कठिन बात है। सत्य को निर्भय होकर कह पाना, ये ब्रह्मा बाबा ये बात को ठीक तरीके से, सत्य रूप से कहता है और वो भी निर्भय होकर।

तुलसीदास ने इतनी बड़ी रामायण लिख डाली। और आज तुम छोटे से व्यक्ति, वो कहते हैं ना नन्ही सी जान और गजभर जुबान। तुम ये क्या गलत बात कहते हो, लाठियां मारेंगे फिर लाठियां खानी पड़ेंगी। लाठियां खाओगे? मैं मन में सोचने लगा कि अभी टोली तो बाबा ने खिलाई नहीं थी, पहले लाठियां खिलाने की बात बाबा ने कर दी। आपको तो टोली मिलती है मुझे ऐसे लगा मुझे तो लाठियां लगेंगी।

कोई बात नहीं, तो मैंने कहा बाबा आपके आदेश से, आपके निर्देश से, आपकी छत्रछाया से काम करूंगा। आपके संरक्षण में मुझे किस बात का डर है? बाबा बोले, सच कह रहे हो सोच के? मैंने कहा सोच के कह रहा हूँ। मैंने कहा ये जीवन आपका है इसको जिस काम में लगाना चाहते हैं, लगा लीजिए। मैं तो वही करूंगा जो आप कहेंगे। लाठियां खाने के लिए आप कहेंगे लाठियां खाऊंगा। गोलियां खाने को कहेंगे गोलियां खाऊंगा। तो मैंने देखा सत्य, भगवान के लिए कहते हैं सत्यम शिवम सुन्दरम और निर्भय। सारा समाज एक तरफ, सबके सब लोग ए टू जेड कह रहे हैं कि राम की सीता चुराई गई थी। झगड़ा ही यहाँ से शुरू हुआ सारा, कि राम की सीता चुराई गई थी। और एक है जो कहता है नहीं चुराई गई थी। हम कहते हैं नहीं चुराई गई थी।

आमतौर से व्यक्ति की नेचर ये है कि जिसमें लोगों से संघर्ष कम हो, झगड़ा न हो वो बात कहता है। ऐसी बात कोई अजीब आदमी ही कहता है जिससे लाठियां खाने के लिए तैयार हो। ये सत्य कहता है और डरता नहीं है। सेवा का पहले देखा और आते ही, बैठते ही ये देखा। ये है सत्य स्वरूप। सारी दुनिया कुछ भी कहे, सारी दुनिया रात को कहे कि अब दिन है, नहीं वो दिन नहीं रात है तो हम कहेंगे रात है। ऐसे की तलाश में मैं था। ये स्वयं सत्य, सत्यस्वरूप है और सत्य को जानना ये भी एक बात है। लेकिन सत्य को कह पाना ये और कठिन बात है। सत्य को निर्भय होकर कह पाना, ये बुजुर्ग व्यक्ति ये बात को ठीक तरीके से, सत्य रूप से कहता है निर्भय होकर। ग्रंथसाहब है सिखों का उसमें आता है पहले शुरू-शुरू में कि वो निर्भय है, भगवान जो है वो निर्भय है। और किसी मनुष्य को किसी भी परिस्थिति में, कोई भी कारण से, कभी भी अंश मात्र, लेश मात्र थोड़ा भी क्षण मात्र के लिए भी भय हो सकता है। उसको कोई भय नहीं, ये पहचान है उसकी। वो सबसे सामना करने को तैयार है।

- क्रमशः

चेन्नई-तमिल नाडु। ब्रह्माकुमारीज़ के हैप्पी विलेज सेंटर पर राज्यपाल थिरु आर.एन. रवि के वर्चुअल प्रेज़ेंस एवं ब्लेसिंग्स के साथ ब्रह्माकुमारीज़ के 'वैल्यूज़ एंड स्पीरिचुअलिटी फॉर बेटर गवर्नेंस एवं नशा मुक्त भारत अभियान' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,चेयरपर्सन,एडमिनिस्ट्रेशन विंग,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. बीना बहन,चेन्नई, ब्र.कु. हरीश भाई,मुख्यालय संयोजक,एडमिनिस्ट्रेशन विंग तथा ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,मुम्बई।

गांधीधाम-भारत नगर(गुज.)। कच्छ के गांधीधाम स्थित डी.पी.टी. ग्राउंड में श्री बागेश्वर धाम सरकार द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय सुन्दरकाण्ड कथा के दौरान श्री धीरेंद्र शास्त्री जी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् परमात्म स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता बहन,स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका। साथ हैं ब्र.कु. दिव्या बहन।

आगरा-पीपल मंडी(उ.प्र.)। आगरा विकास परिषद सम्पर्क शाखा अंतर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा आयोजित आगरा महोत्सव मिड नाइट बाज़ार के मंच पर 'नारी को सलाम नारी का सम्मान' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मेयर हेमलता दिवाकर के द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. पारसमणि बहन को आध्यात्मिकता के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही इस मौके पर विभिन्न क्षेत्रों में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाली शहर की 17 महिलाओं को भी सम्मानित किया गया।

छतरपुर-विश्वनाथ कॉलोनी(म.प्र.)। नवनिर्वाचित विधायक श्रीमती ललिता यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रमा बहन। साथ ही उन्हें ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण भी दिया। इस मौके पर ब्र.कु. नीतू बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन तथा ब्र.कु. रीमा बहन मौजूद रहे।

इंदौर-ज्ञानशिखर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ इंदौर ज़ोन के संस्थापक व पूर्व क्षेत्रीय निदेशक ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी के 8वें पुण्य स्मृति दिवस पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ जयपुर सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुषमा दीदी, ब्र.कु. हेमलता दीदी, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन के प्रेज़िडेंट संतोष शुक्ला, कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता विश्व विद्यालय,रायपुर के पूर्व कुलपति डॉ. मानसिंह परमार, उज्जैन सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा दीदी, जयपुर से वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. चन्द्रकला बहन, पूर्व महापौर उमाशशि शर्मा, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. शशि बहन तथा अन्य।

कादमा-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र एवं समाज सेवा प्रभाग के तत्वाधान में आयोजित 'निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर' का फीता काटकर शुभारंभ करते हुए सीएमओ डॉ. विनोद कुमार, डिप्टी सीएमओ डॉ. आशीष मान, ब्र.कु. वसुधा बहन, सरपंच प्रतिनिधि महेश फौजी, ब्र.कु. ज्योति बहन, नीतू पंच, सुबे स्वामी पंच, समाज सेवा समिति के अध्यक्ष मा. संजू जी तथा अन्य। इस अवसर पर डॉ. भूपेंद्र सिंह एसएमओ गोपी, डीपीएम संजय, डॉ. रमेश पीएचसी कादमा, डॉ. अंबिका, डॉ. अभिमन्यु, डॉ. प्रदीप मुकेश बलबीर, रजनीश संजू, पूजा आदि शामिल रहे।

अभनपुर-रायपुर(छ.ग.)। नव निर्वाचित विधायक इंद्र कुमार साहू को बधाई देने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. सविता बहन एवं ब्र.कु. रामेश्वरी बहन।

लखनऊ-उ.प्र.। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के लखनऊ में आगमन पर शहर के विभिन्न ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की संचालिका बहनों ने राज भवन में जाकर ईश्वरीय सौगात व सम्मान-पत्र भेंट कर उनका स्वागत किया तथा शहर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराया। इस मौके पर ब्र.कु. राधा बहन,सबज़ोन इंचार्ज, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. इंदिरा बहन, ब्र.कु. सुमन बहन, ब्र.कु. मालती बहन, ब्र.कु. चारु बहन, डी.सी. लखा,रिटा. आईएएस, आर.के. अग्रवाल,चेयरमैन,टेक्नो इंस्टीट्यूट, डॉ. भूपेन्द्र भाई व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

शांतिवन-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में अंतर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय के संत, राजस्थान सरकार देवस्थान विभाग के संत प्रकोष्ठ सदस्य और सर्वधर्म महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री 1008 भजनाराम महाराज ने संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी से मुलाकात की। इस दौरान दादी ने महाराज को शॉल पहनाकर और मोमेंटो देकर सम्मानित किया।

रायपुर-छ.ग.। नवनिर्वाचित विधायक एवं पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह का पारंपरिक तरीके से तिलक लगाकर व गुलदस्ता भेंट कर स्वागत व सम्मान करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी।

भिलाई से.7-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग भवन सेवाकेन्द्र में आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, उज्जैन से राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, इंदौर ज़ोन एवं छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, इंदौर से राजयोगिनी ब्र.कु. शकुंतला दीदी, मुम्बई से राजयोगिनी ब्र.कु. भावना दीदी तथा अन्य बहनें।

भाटापारा-छ.ग.। नव निर्वाचित विधायक इंद्र साव को बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात श्रीफल व प्रसाद देते हुए ब्र.कु. मंजू बहन व ब्र.कु. प्रभा बहन।

खोकरला-भंडारा(महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ राजयोग अनुभूति केंद्र पर संस्थान के मेडिकल विंग, आईएमए, आईडीए एवं एनआईएमए के संयुक्त तत्वाधान में 'स्पीरिचुअल हीलिंग तथा वेल बिंग' विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेन्स में न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. स्वपन गुप्ता, ब्र.कु. शिवलाल भाई तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति भवन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में महामण्डलेश्वर डॉ. शिव स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज,जोधपुर स्वामी श्याम चैतन्य पुरी जी, ब्र.कु. रेवती बहन, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य।

समय हमारा व्यर्थ न जाये... पर सफल कैसे हो...!!!

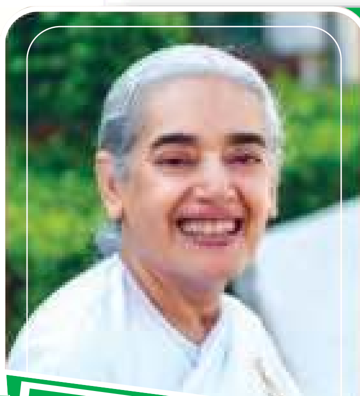

राजयोगिनी ब्र.कु.जयंती दीदी,अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

पुरूषार्थी जीवन में अगर वो लक्ष्य हमारे सामने है ये हमें ऐसे सम्पूर्ण निर्विकारी देवता बनना है तो हम वहाँ पहुंच पायेंगे। यदि आँख इधर-उधर गई तो फिर वो टाइम हमारा खिसक जाता। और जब कोई ऐसी साइड सीन आती चाहे वो किसी के प्रति कुछ लगाव की बात हो, जिस कारण से हम उन्हों का आधार लेने चाहते, सहारा लेने चाहते। चाहे किसी के प्रति मन में ग्लानि की बात आती, जिस कारण से कुछ टक्कर होता रहता। चाहे कुछ भी हो, परन्तु मतलब ये है कि हमारा समय, संकल्प, शक्ति बिल्कुल वेस्ट चली जाती। जहाँ-जहाँ हाईवे होता वहाँ-वहाँ आप जानते हैं कि यदि एक टर्न मिस हो जाता है बायचांस तो कितना लम्बा चलना पड़ता है। कभी-कभी18 किलोमीटर्स, 20 किलोमीटर्स फिर ही वापस लौट सकते हैं। तब हम सोचते हैं कि हाय हमारा कितना टाइम चला गया। पेट्रोल कितना एक्स्ट्रा खत्म हो गया परन्तु समय पर हम अपने कारोबार के लिए या जो कुछ भी कार्य है हम उस पर नहीं पहुंच पाते। राइट?

तो यदि कोई भी कारण से हमारा ध्यान कहीं ओर चला गया, हमारा समय, हमारी शक्ति जो वेस्ट होती तो हमें एक्स्ट्रा पुरूषार्थ करना पड़ता है। तो ये हम ध्यान रखें कि कोई बात के कारण या किसी के प्रभाव के कारण या चाहे किसी की नफरत के कारण हम अपनी दृष्टि जिस लक्ष्य को बाबा ने दिया है और हम चाहते हैं हम वहाँ पहुंचे, हम उससे कभी हिल न पायें। तो बाबा की मदद भी रहेगी और बाबा की मदद के साथ-साथ हम अपनी हिम्मत से चलते रहेंगे। बाबा गैरन्टी देता कि हाँ अब ज़रूर पहुंच पायेंगे। मैंने देखा है कि सर्वोत्तम पुरूषार्थ में एक बहुत सच्चाई चाहिए। जब हम ज्ञान मार्ग में आते हैं तो हमें खुद की पहचान नहीं होती, और ये हम नहीं कहते हैं कि आत्मा ज्योति स्वरूप है, बस मैं बिन्दु हूँ और उसमें सबकुछ आ गया। बाबा खुद ही कहते कि ये तो कुदरत है- आत्मा बिन्दु और बिन्दु आत्मा में 84 जन्मों का हिसाब समाया हुआ है। ये तो कितनी गहरी बात है। और इसको अच्छी तरह से जानना समझना तब होता जबकि हम खुद को समय देवें।

ज्ञान मार्ग में आते हैं तो ज्ञान तो बहुत इंट्रस्टिंग लगता, मैं अपना अनुभव कहती हूँ, क्यों, क्योंकि जो भी मन में प्रश्न होते हैं बाबा के बहुत ही क्लीयर उत्तर मिलते जाते हैं। शास्त्रवाद से पूछो किसी बात का तो वो तो कहेंगे कि जो परम्परा से चला है उसी को ही मानो। क्रिश्चयन धर्म वालों से पूछो कोई प्रश्न तो उन्हों का शब्द आता कि ये तो मिस्ट्री है। मनुष्य के बुद्धि से समझने के बाहर है। आत्मा के लिए ये बाइबल में शब्द लिखे हुए हैं कि मनुष्य की बुद्धि आत्मा को समझ नहीं सकती। तो सही बात है द्वापर में तो वही बात थी। परंतु जब भगवान आकर हमें बताते हैं हर प्रकार से कि आत्मा क्या है, आत्मा के अन्दर क्या है तो फिर तो हम कहेंगे कि हाँ हम समझ गये। परंतु फिर भी खुद को जानना मेरे अन्दर ओरिज़नल संस्कार जो आदि संस्कार हैं शांति, प्रेम, सत्यता, खुशी, और पवित्रता तो ये पाँच आत्मा के आदि गुण अथवा संस्कार। और जैसे हम उनसे दूर होते गये मन में क्या असर हुआ, शब्दों में क्या असर हुआ, चक्र को देखते चलो।

> सर्वोत्तम पुरूषार्थ में एक बहुत सच्चाई चाहिए। जब हम ज्ञान मार्ग में आते हैं तो हमें खुद की पहचान नहीं होती, और ये हम नहीं कहते हैं कि आत्मा ज्योति स्वरूप है, बस मैं बिन्दु हूँ और उसमें सबकुछ आ गया।

सतोप्रधानता से हम सतो तक पहुंचे, फिर तो रजोप्रधान बन गये, मिक्सचर शुरू हो गई। और फिर तब से हम नहीं चाहते थे कि कोई मेरे मन के संकल्पों को देख सके। कलियुग में तो बिल्कुल कचरे का संकल्प परंतु द्वापर में भी दुविधा कभी अच्छा, कभी इतना अच्छा नहीं, मिक्सचर चलता रहा। और हम अपने वो आदि संस्कारों को भूल कितना और ऊपर मैल चढ़ता गया। तो कितना हमारे ऊपर मैल है ये भी कई बार हम अच्छी तरह से नहीं समझ पाते। कभी-कभी बाबा कहते हैं कि स्वप्न भी ऐसे हों, जिसमें कोई प्रकार की अशुद्धि न हो, स्वप्न ऐसे हों जिसमें बाबा आयें। परंतु उससे भी और आगे आप अनेक आत्माओं को जागृत करने के लिए उन्हों के स्वप्नों में आकर उन्हों को बाबा की तरफ का इशारा दो। स्वप्नों की भी स्टेजेस होती, स्वप्नों का कनेक्शन है टोटली मन के साथ और संस्कारों के साथ। जो दिनभर अपना कर्त्तव्य होता, उसका जो प्रोसेसिंग चलता है वो रात्रि भर चलता। तो कहने का मतलब है कि बाबा क्यों कहते हैं कि आपके संकल्प में भी कोई और ऐसी बात न हो क्योंकि संकल्पों से भी पहचान होती है कि हम कहाँ तक पहुंचे हैं। दिनभर तो अपनी चेकिंग करें कि हमारे संकल्प किस प्रकार के हैं और जितनी चेकिंग उतना परिवर्तन और उस परिवर्तन के आधार से हम अपने लक्ष्य पर पहुंच सकेंगे। तो ये जो फर्क पड़ जाता है कि मन में कुछ और बात होती और बोलते फिर कुछ और हैं, और करते कुछ और हैं। अनुभव है ना सभी को इस बात का?

मन में जो कुछ चल रहा होगा वो छिपाते रहेंगे, शब्दों में बड़ी शानदार भाषा से बोलते रहेंगे। और आजकल तो बोलने की भी ट्रेनिंग दी गई है। तो फिर तो वो बहुत होशियार स्पीकर बन जाते। परंतु उन्हों के मन की गति क्या है, उन्हों के मन की शुद्धि क्या है दोनों बातों में महान अन्तर है। या ये भी सोचें कि कभी मुख से कुछ ऐसे अनुचित शब्द निकलते तो उस समय मैं सोचती हूँ कि संकल्प कितने व्यर्थ चले होंगे। जिस कारण से मुख से ये शब्द निकल रहे हैं। मानो कि बैठ के कोई ग्लानि करता उसका मतलब उसने उस बात पर इतना विचार किया हुआ होगा लम्बे समय तक, जो आज उसके मुख से ये बातें निकल रही हैं। तो माइंड कहाँ गया, क्या हो रहा तो बाबा ने हमें बहुत डिटेल में समझाया है। तो खुद से पहले हम सच्चे बनें, और निरहंकारी होकर नम्रता से इस बात को समझें कि हमारे अन्दर के किस प्रकार के संस्कार अभी हैं जिन्हों को हमें अभी साफ करना होगा।

दिल्ली-आर.के. पुरम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा निवेदिता कुंज में 'सेलिब्रेटिंग लाइफ' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए बायें से शेखर चौधरी,डायरेक्टर,मिनिस्ट्री ऑफ फिनान्स,प्रेसिडेंट आरडब्ल्यूए, प्रभु नारायण,वाइस प्रेसिडेंट आरडब्ल्यूए, विवेक मोहन,डायरेक्टर,आईआरएसएमई,सेक्रेट्री ऑफ आरडब्ल्यूए, ब्र.कु. प्रो. ओंकार चंद,मोटिवेशनल स्पीकर, ब्र.कु. ज्योति बहन,होस्ट,स्थानीय सेवाकेन्द्र, तुलसी जोशी,एक्स काउंसलर,सोशल एक्टिविस्ट,ब्यूरो चीफ पोल.अफेयर्स, धर्मवीर सिंह,काउंसलर, सुनील कुमार,डायरेक्टर,सेंट्रल वॉटर कमिशन तथा ब्र.कु. अनीता बहन,संयोजिका,स्थानीय सेवाकेन्द्र।

नेपाल-बासबारी(विराटनगर)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर 'सकारात्मक परिवर्तन 2023' थीम के अंतर्गत आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू, बूढ़ीगंगा नगरपालिका के नगराध्यक्ष जीत नारायण थापा, बूढ़ीगंगा नगरपालिका की उप नगराध्यक्ष अमृता गच्छदार, समाजसेवी भुवनेश्वर मंडल, सशस्त्र प्रहरी बल कंदालिनी जी, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सत्यभावना बहन, ब्र.कु. तुलसी भाई, ब्र.कु. ब्रजबाला बहन, डिग्री कॉलेज के प्रोफेसर राजू थापा सहित बड़ी संख्या में वरिष्ठ नागरिक शामिल हुए।

सूरत-सारथना(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'जल जन अभियान' के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रमुख श्री सौराष्ट्र जलधारा ट्रस्ट मथुर भाई सवानी, लायंस क्लब डिस्ट्रिक्ट गवर्नर दीपक भाई, चीफ कंज़र्वेटर ऑफ फॉरेस्ट शशि कुमार, निवृत्ति दिन एवं आचार्य नवसारी कृषि यूनिवर्सिटी डॉ. रमेश भाई पटेल, डायरेक्टर एम्स हॉस्पिटल डॉ. संजय, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट वृद्धम हॉस्पिटल डॉ. जय, लोक दृष्टि चक्षु बैंक डॉ. प्रफुल्ल शिरोया, ब्रह्माकुमारीज़ उप क्षेत्रीय संचालिका नडियाद सबज़ोन ब्र.कु. पूर्णिमा बहन, सूरत वराछा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तृप्ति बहन तथा अन्य गणमान्य लोग।

अमृतसर-पंजाब। बाघा रोड स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शांति सरोवर सेवाकेन्द्र में 'दादी चंद्रमणि वर्ल्ड पीस हॉल' का ब्रह्माकुमारीज़ की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर माउण्ट आबू से ब्र.कु. हंसा दीदी, पंजाब ज़ोन संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. उत्तरा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, राजयोगी ब्र.कु. भारत भूषण भाई, अकाल तखत अमृतसर के जत्थेदार ग्यानी गुरबचन सिंह, समाज सेवक डॉ. कमल डालमिया, श्रीमती स्वराज ग्रोवर, डॉ. राजीव देवगन,प्रिंसिपल गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज अमृतसर, सरदार दिलबाग सिंह,अध्यक्ष मार्किट समिति, शिखा सरीन,पूर्व अध्यक्ष फिक्की फ्लो सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे। दादी चंद्रमणि वर्ल्ड पीस हॉल में 1500 से अधिक लोगों के बैठने की सुविधा है।

मुरादाबाद-उ.प्र.। 'सम्बंधों में मधुरता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. शिवानी दीदी, डॉ. बी.के. दत्त, डॉ. दीपाली वर्मा, डॉ. इंदु मणि, मेयर विनोद अग्रवाल, एडीएम सिटी ज्योति सिंह, सीडीओ गाज़ियाबाद अभिनव गोयल, एमडीए डिजाइनको के एम.डी. विपिन लोहिया, ब्रह्माकुमारीज़ के मेरठ सबज़ोन की संचालिका ब्र.कु. आशा दीदी व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित 3000 से अधिक लोग शामिल रहे।

राजसमंद-राज.। जयपुर राजघराने की राजकुमारी एवं राजसमंद जिले की सांसद दीया कुमारी जी को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. पूनम बहन। साथ हैं ब्र.कु. गौरी बहन।

जानें....

परमात्मा को पाने का सही माध्यम है क्या... !!!

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

एक बार की बात याद आती है, एक ग्वाल बाल था गऊ चराने वाला। और जब वो गायों को लेकर जाता था तो रास्ते में एक खुला मैदान आता था और वहाँ छोड़ देता था। जहाँ सभी गायें घास खाती थी और वो शांति से एक झाड़ के नीचे बैठ जाता था। जंगल में वो अकेला होता था। वो शांति से बैठकर मन ही मन भगवान से बातें करता रहता था। भगवान से कहता था कि हे प्रभु तू भी अकेला है और मैं भी यहाँ अकेला हूँ। थोड़ी देर के लिए तुम आ जाओ, यहाँ बैठेंगे और बातें करेंगे। ऐसे कभी क्या बात करता, कभी क्या बात करता।

एक दिन जब वो जंगल में गायों को घास चरने के लिए छोड़ने के बाद रोज़ की तरह शांति से झाड़ के नीचे बैठा तो उसके मन में विचार आया कि जैसे मैंने गायों को छोड़ दिया वैसे ईश्वर ने भी हमें इस संसार में छोड़ दिया है। हर कोई अपना-अपना कर्म कर रहा है। अब वो भी मेरी तरह कहीं अकेला ही बैठा होगा। तो मन ही मन भगवान से बात करता है कि हे प्रभु तू भी अकेला है, मैं भी अकेला हूँ। मुझे तो पता नहीं तू कहाँ है लेकिन तूझे तो पता है ना है कि मैं यहाँ हूँ। थोड़ी देर आ जाओ बात करेंगे, गपशप करेंगे। टाइम पास करेंगे, अकेला-अकेला बड़बड़ा रहा था। इतने में वहाँ से एक पंडित जी गुज़र रहे थे। पंडित जी ने देखा कि ये लड़का अकेला-अकेला बड़बड़ा रहा है। पूछा कि हे लड़के किससे बात कर रहा है? उसने कहा किसी से नहीं। पंडित जी बोले अरे तू बड़बड़ा रहा है, किससे बात कर रहा है? तो उसने कहा कि बस, भगवान से बातें कर रहा था।

पंडित जी को बड़ी जिज्ञासा हुई कि अच्छा भगवान से बात कर रहा था! क्या बातें कर रहा था? हम भी सुनें। लड़के ने अपने मनोभाव व्यक्त कर दिए कि बस उसको कह रहा था कि बस थोड़ी देर के लिए तुम आ जाओ, बैठेंगे बातें करेंगे। पंडित जी को बड़ा गुस्सा आया और कहा कि तू जानता भी है कि ईश्वर कौन है? वो कितनी ऊंची हस्ती है। वो क्या गपशप करने के लिए है! टाइम पास करने के लिए है! ये कोई सभ्यता है भगवान को याद करने की? लड़के ने हाथ जोड़कर कहा कि मुझे तो और कुछ नहीं आता, मैं तो हर रोज़ ऐसे ही बातें करता हूँ। कहा, गलत बात ऐसा नहीं करने का। बड़ा फील हुआ उसको और बड़ी हिम्मत जुटा कर कहा कि पंडित जी क्या आप मुझे सीखा सकते हो? क्योंकि मैं रोज़ जंगल में अकेला होता हूँ। मेरा टाइम पास नहीं होता। आप मुझे सिखाइये, तो उस अनुसार मैं याद करूंगा।

पंडित जी ने कहा बैठो सिखाता हूँ। और उसको एक संस्कृत का श्लोक पक्का कराना शुरू कर दिया। अनपढ़ बालक उसको संस्कृत क्या मालूम! उसको एक-एक शब्द रटाते गये रटाते गये, दो घंटे लगे श्लोक रटाने में। सारा श्लोक रटने के बाद पंडित जी ने कहा रोज़ ऐसे ही याद करना अभी। तो कहा कि जी रोज़ ऐसे ही याद करूंगा।

- क्रमशः

आत्मा और परमात्मा का मिलन, उससे कनेक्शन दिल से होता है, न कि शब्दों से। क्योंकि हम सभी जानते हैं कि आज तक हम कितने श्लोक, कितनी आरतीयां गाते आये लेकिन कभी उसके दर्शन नहीं कर पाये, उसको कभी पा नहीं सके। पूरा जीवन हमने निकाल दिया लेकिन फिर भी उसके एक दर्शन की प्यासी आँखें उसको ढूंढती रहीं। लेकिन अब हम इस लेख के माध्यम से कहें या इस कहानी के माध्यम से हम समझेंगे कि परमात्मा को पाने का सही माध्यम है क्या!

दुर्ग-छ.ग.। नवनिर्वाचित विधायक गजेन्द्र यादव को गुलदस्ता भेंट कर बधाई देने के साथ नव वर्ष का कैलेंडर भेंट करते हुए ब्र.कु. रीटा बहन व ब्र.कु. रुपाली बहन।

कौल-कुरुक्षेत्र(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ उपसेवाकेन्द्र में दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में अनीता चौधरी,महिला मोर्चा अध्यक्ष भाजपा कैथल, कुरुक्षेत्र सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. सरोज बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. उर्मिला बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

राजपुर-बड़वानी-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान नगर अध्यक्षा श्रीमती शिखा अग्रवाल को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रमेश भाई,माउण्ट आबू। साथ हैं सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रमिला बहन तथा अन्य।

तखतपुर-छ.ग.। 'नशा मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत कार्यक्रम के पश्चात् डी.एस.पी. गौरव सिंह एवं आई.जी. राजपूत जी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता बहन।

राँची-झारखंड। दीपावली महोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए अनुरंजन झा,प्रखंड विकास पदाधिकारी, संजय सिंह,अधिवक्ता, डोमन सिंह मुंडा,सेवानिवृत्त भारतीय प्रशासनिक सेवा, सुनील गुप्ता,आर्ट ऑफ लिविंग, अभयेंद्र जी,समाजसेवी, डॉ. आशीष भगत,डेंटिस्ट, विभूति शंकर सहाय,अभिवक्ता, राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, श्रीमती अनुरंजन झा, कंचन सिंह,सहायक निदेशक,समाज कल्याण निदेशालय, प्रकाश बजाज,समाजसेवी व सेवानिवृत्त बैंक प्रबंधक, कन्हाई प्रसाद,कार्यपालक अभियंता, एस.एन.पी. गुप्ता,सेवानिवृत्त अधीक्षण अभियंता तथा अनूप अग्रवाल।

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर संस्थान के कला एवं संस्कृति प्रभाग के तत्वाधान में 'सकारात्मक विश्व के निर्माण में साहित्यकारों का योगदान' विषय पर साहित्यकारों के लिए आयोजित परिचर्चा में डॉ. देवेंद्र कुमार सारस,केंद्रीय जेल अधीक्षक उमरिया, डॉ. चंद्रिका प्रसाद द्विवेदी चंद्र, डॉ. रामसरोज द्विवेदी(शांतिदूत), नारायण डिगवानी, शायर हशमत रीवानी, मानस विदुषी डॉ. ज्ञानवती अवस्थी, कला एवं संस्कृति प्रभाग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, कार्यक्रम के मुख्य वक्ता ब्र.कु. वेणुगोपाल भाई,माउण्ट आबू, कवियत्री विदुषी डॉ. अरुणा पाठक, ब्र.कु. डॉ. अर्चना, ब्र.कु. नम्रता बहन, ब्र.कु. दीपक तिवारी आदि मौजूद रहे।

कादमा-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़, भारत स्काउट्स एंड गाइड्स व राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वाधान में 'मेरा गांव नशा मुक्त गांव' रैली का ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र से हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए जिला सिविल सर्जन डॉ. विनोद कुमार, ब्र.कु. वसुधा बहन, सरपंच प्रतिनिधि महेश फौजी, डॉ. शिल्पा, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी रणधीर सिंह व नरेंद्र सिंह, डॉ. आशीष मान,डिप्टी सीएमओ, डॉ. भूपेंद्र सिंह,एसएमओ, सूबेदार रोहताश सांगवान, झोझूकलां सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन तथा अन्य।

बोकारो स्टील सिटी-झारखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् उपायुक्त कुलदीप चौधरी एवं उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुसुम बहन,निर्देशिका,ब्रह्माकुमारीज़ बोकारो तथा ब्र.कु. सुमन बहन,पांडव भवन।

सूरत-अडाजन(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ के सायण सेवाकेन्द्र के भूमि पूजन कार्यक्रम में सायन शुगर फैक्ट्री के चेयरमैन राकेश भाई पटेल, ब्र.कु. दक्षा बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. योगेश भाई पटेल सहित बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

रोहतक-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ शीला बाईपास सेवाकेन्द्र की ओर से भाजपा कार्यालय ग्राउंड में ब्र.कु. कुसुम बहन व ब्र.कु. सीमा के दिव्य समर्पण व सम्मान समारोह एवं दीपावली के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी,अध्यक्ष,महिला प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़,दिल्ली, बिज़नेसमैन राजेश जैन,एमडी एलपीएस, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. वासुदेव भाई, ब्र.कु. चेतना बहन,महम व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित लगभग 1500 लोग शामिल रहे।

कटक-ओडिशा। राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उन्हें कटक में ईश्वरीय सेवाओं की स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन करने के लिए निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. सुलोचना बहन,एडिशनल डायरेक्टर,ब्रह्माकुमारीज़,कटक सबज़ोन, ब्र.कु. नथमल भाई,नेशनल कोऑर्डिनेटर,ज्यूरिस्ट विंग,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. सुधांशु भाई,सीईओ,डीटीएस, ब्र.कु. गोपाल भाई, ब्र.कु. त्रिवेणी बहन, ब्र.कु. मानसी बहन तथा ब्र.कु. प्रतिभा बहन,एडमिनिस्ट्रेटर,आचार्य हरिहर कैंसर हॉस्पिटल। इस अवसर पर ओडिशा की प्रसिद्ध ताराकसी वर्क की सौगात भी राष्ट्रपति को भेंट की गई।

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ की नई आध्यात्मिक फिल्म 'रॉयल कलाकार' को संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी ने पोस्टर से एवं मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई ने यूट्यूब पर रिलीज़ किया। इस फिल्म की एक नई कहानी है जिसे नए प्रोफेशनल अंदाज़ में बनाया गया है। शांतिवन के विशाल डायमण्ड हॉल में फिल्म का पोस्टर संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी को भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई। साथ हैं फिल्म के राइटर डायरेक्टर ब्र.कु. भरत कुमार,अहमदाबाद व ब्र.कु. वल्लभ भाई। इस फिल्म के प्रोड्यूसर ब्र.कु. नेहा बहन,सुख शांति भवन अहमदाबाद और दिव्य दृष्टि फिल्म्स हैं। म्यूज़िक डायरेक्टर नारायण परिहार व परफॉर्म बॉय-प्रोफेशनल फिल्म एक्टर्स,अहमदाबाद हैं।

अच्छी सुबह के चार दुश्मन

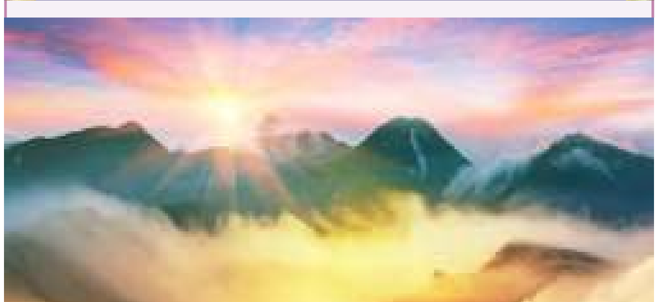

आज की जो हमारी लाइफ स्टाइल है वो बहत ही अलग हो गई है। इसमें हमारे लिए क्या सही है और क्या नहीं ये हम चयन नहीं कर पा रहे। अगर हम अपनी लाइफ स्टाइल पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि हम कितना कुछ गलत तरीके से जी रहे हैं। तो कुछ चीज़ें हम आपके सामने रख रहे हैं जो हमारी लाइफ के लिए बहुत ही इम्पोंटेंट है, जिनपर ध्यान देना बहुत ज़रूरी है...

फोन चेक करना

इससे बचना तो सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। फोन हाथ में आते ही पता ही नहीं चलता कि 20-25 मिनट कहां चले गए। और अगर शुरूआत ही फालतू गतिविधि से हुई, तो खिड़कियां खोलकर, बाहर का नज़ारा लीजिए।

कॉफी या चाय की चुस्की

यह एक और लत है, जिसे प्रातः कालीन प्रथम गतिविधि के रूप में अपनाने से बचना चाहिए। बिना किसी व्यायाम के, गर्म पेय को उदरस्थ करना ठीक नहीं। इसके बजाय कुछ देर खुली हवा में टहलिए। कोई व्यायाम कीजिए।

ढेर सारे काम करने लगना

महिलाओं के साथ मुश्किल यही है कि उठते साथ ही रसोई में जाना होता है। बर्तन जमाना, पानी भरना, नाश्ते-खाने की तैयारी आदि में जुट जाना पड़ता है। लेकिन इस अफरा-तफरी से ताज़गी कैसे महसूस होगी!

रात में ही सुबह के कामों की प्राथमिकता के आधार पर सूची बना लें, तो सुबह की भाग-दौड़ को काफी हद तक कम किया जा सकता है। सुकून से शुरू हुआ दिन मन-शरीर को ताज़ा, दिन के सिलसिले को सुथरा और व्यवस्थित रखता है।

धूप से दूरी

घर के भीतर ही भीतर रहने से अजीब-सी उदासी और सुस्ती आने लगती है। धूप से दूर रहने से कई तरह के रोग भी जकड़ लेते हैं। सुबह की धूप में 15-20 मिनट टहलने से न सिर्फ विटामिन-डी हासिल होगा बल्कि नेत्र व जोड़ों की सेहत को भी फायदा होगा।

हरी मेथी से स्वास्थ्य में आती हरियाली

स्वास्थ्य

सर्दियों के मौसम में कई तरह की हरी सब्जियां मिलती हैं जो खाने में लाजवाब होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत ज़्यादा फायदेमंद होती है। ऐसी ही हरी सब्जियों में से एक है मेथी के पत्तों की सब्जी। मेथी की पत्तियां सेहत के लिए बेहद लाभप्रद होती हैं। मेथी की पत्तियां फाइबर, प्रोटीन, आयरन, मैंगनीज़ और मैग्नीशियम से भरपूर होती है। इसलिए इन्हें सर्दी के मौसम में अपनी डाइट में ज़रूर शामिल करना चाहिए।

इसके खाने के भरपूर फायदे...

डायजेशन

मेथी फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट से भरपूर मानी जाती है जो कब्ज या पाचन से जुड़ी समस्या को दूर करने में मदद कर सकती है। हरी मेथी का सेवन पाचन के लिए लाभदायक हो सकता है।

डायबिटिज के लिए

डायबिटिज के रोगियों के लिए मेथी के पत्तों का सेवन करना फायदेमंद माना जाता है। इसको आप जूस और सब्जी के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। मेथी में अमिनो एसिड पाया जाता है, जो डायबिटिज के रोगियों के लिए लाभदायक हो सकता है।

स्किन के लिए लाभदायक

मेथी को स्किन के लिए अच्छा माना जाता है। मेथी का सेवन स्किन पर होने वाले निशान या दाग-धब्बों को कम करने में फायदेमंद हो सकता है।

हड्डियों के लिए

मेथी में प्रोटीन भरपूर मात्रा में पाया जाता है यह बोन मेटाबॉलिज़्म के लिए काफी अच्छा होता है। मेथी के सेवन से हड्डियों को मजबूत बनाया जा सकता है।

बालों के लिए फायदेमंद

बालों के लिए भी मेथी की पत्तियां काफी लाभदायक मानी जाती हैं। मेथी की पत्तियों को पीसकर बालों में लगाने से बाल काले, घने और चमकदार बन सकते हैं।

कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करे

मेथी की पत्तियां लिवर में कोलेस्ट्रॉल के अवशोषण और कोलेस्ट्रॉल के उत्पादन में सुधार करने में मदद कर सकती हैं। यह एथेरोस्क्लेरोसिस और मधुमेह से पीड़ित लोगों में कोलेस्ट्रॉल को कम करती हैं। कुछ अध्ययन यह भी बताते हैं कि मेथी अच्छे(एचडीएल) कोलेस्ट्रॉल के उत्पादन को बढ़ा सकती है और खराब(एलडीएल) कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स के उत्पादन को कम कर सकती है।

आयरन से भरपूर

आयरन हीमोग्लोबिन का एक महत्त्वपूर्ण घटक है, जो लाल रक्त कोशिकाओं में होता है। शरीर के सभी हिस्सों में अगर आपको आयरन की कमी है तो आपको अपने आहार में मेथी की पत्तियों का सेवन करना चाहिए क्योंकि इन पत्तियों में भरपूर मात्रा में आयरन पाया जाता है। मेथी के पत्तों में फोलेट होता है। जो बोन मैरो में आरबीसी और डब्ल्यूबीसी के तेजी से विकास के लिए आवश्यक है।

मेथी की पत्तियों का सेवन सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है लेकिन स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई अन्य समस्या होने पर इसके सेवन से पहले विशेषज्ञ की सलाह अवश्य लें।

डीआरसी-भुवनेश्वर(ओडिशा)। ब्रह्माकुमारीज़ के डिवाइन रिट्रीट सेंटर के 7वें वार्षिकोत्सव एवं संदेशी दादी जी के 16वें स्मृति दिवस के कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. लीना दीदी,डायरेक्टर,भुवनेश्वर सबज़ोन तथा बड़ी संख्या में वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों सहित 5000 से अधिक ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे। इस अवसर पर सबज़ोन के वरिष्ठ नागरिक ब्र.कु. भाई-बहनों को सम्मानित भी किया गया।

दिल्ली-मजलिस पार्क। बाल दिवस पर आयोजित कल्चरल एक्टिविटीज़ के पश्चात् बन्धु संगीत महाविद्यालय की निदेशिका एकता बंसल एवं डॉ. अग्रवाल द्वारा बच्चों को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर समूह चित्र में बच्चों के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. राजकुमारी दीदी तथा अन्य।

मधुबनी-बिहार। लोकहा प्रखंड के भारत नेपाल बॉर्डर में 400 स्थानीय निवासियों के लिए नशा मुक्त भारत अभियान मोबाइल वैन द्वारा सम्पन्न हुआ। इस दौरान ब्र.कु. राजीव ने सभी को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन एवं सभी स्थानीय भाई-बहनों का सहयोग रहा।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

ये आध्यात्मिक नियम है... संस्कार से संसार बनता

आप अपने बच्चों के लिए क्या चाहते हैं? आपका बच्चा कैसा होना चाहिए? जाहिर है चाहेंगे कि बच्चे संस्कारी हों। संस्कारी में भी कौन-से होते हैं। कभी-कभी बीच-बीच में रूककर इसकी परिभाषा भी देख लेनी चाहिए। अच्छा बच्चा मतलब क्या, संस्कारी बच्चा मतलब क्या, नेक इंसान मतलब क्या? ये शब्द तो हम बार-बार बोलते हैं लेकिन उसकी परिभाषा क्या है, उसका अर्थ क्या है? हमने कभी बैठकर सोचा नहीं कि संस्कारी मतलब क्या? क्या संस्कारी बच्चे को गुस्सा आना चाहिए? संस्कारी बच्चा अर्थात् आत्मा, जिसका हर संस्कार ऐसा हो जो दूसरों को तो सुख दे लेकिन उसका संस्कार ऐसा हो कि वो आत्मा खुद सदा सुखी रहे। परिस्थिति आए परिस्थिति जाए, मुश्किलें आएं-मुश्किलें जाएं, लेकिन उसका संस्कार हिलना नहीं चाहिए। ये है संस्कारी।

कोई भी चीज़ अगर कभी-कभी होती है तो वो संस्कार नहीं होती है। संस्कार मतलब मेरा स्वभाव। जैसे अगर किसी के अन्दर शक करने का संस्कार है तो सबसे परफेक्ट व्यक्ति भी उसके सामने खड़ा होगा, तब भी वह थोड़ा शक करेगा ही। क्योंकि उसके अंदर शक करने का संस्कार है। किसी के अंदर शांत रहने का संस्कार है। तो किसी के अंदर बिना बात के चिंता करने का संस्कार है। किसी के अंदर बड़ी-बड़ी बातों को एक सेकंड में खत्म करने का संस्कार है। और किसी के अंदर छोटी-छोटी बातों को जीवनभर पकड़कर रखने का संस्कार है। और हम सब वो संस्कार लेकर यहाँ आए हैं। लेकिन हम कहते हैं कि हम बहुत संस्कारी बच्चे हैं। लेकिन अब हमें अपने संस्कारों को थोड़ा और पॉलिश करने की ज़रूरत है। क्योंकि आजकल हम अपने मूल संस्कार भूल चुके हैं। जैसे- हम कहते हैं टेंशन तो होती ही है। मतलब हमने टेंशन को अपना संस्कार स्वीकार किया है। जबकि शांति मुझ आत्मा का संस्कार है। हमारा कौन-सा संस्कार है? शांति या अशांति। अगर शांति मेरा संस्कार है तो मुझे ये नहीं कहना चाहिए कि थोड़े दिन कहीं दूर चलते हैं, मुझे शांति चाहिए। एक मिनट शांति से बैठने दो मतलब सामने वाले से शांति मांग रहे हैं। जबकि शांति मेरा संस्कार है। तो संस्कारी आत्मा अर्थात् जो अपने संस्कारों के साथ जीते हैं। संस्कार तो हैं लेकिन अगर संस्कार के साथ जीते नहीं, उनका समय आने पर इस्तेमाल नहीं किया तो फिर उसको अपना संस्कार नहीं कहा जा सकता।

> **संस्कारी आत्मा अर्थात् जो अपने संस्कारों के साथ जीते हैं। संस्कार तो हैं लेकिन अगर संस्कार के साथ जीते नहीं, उनका समय आने पर इस्तेमाल नहीं किया तो फिर उसको अपना संस्कार नहीं कहा जा सकता।**

अभी एक सेकंड के लिए चेक करते हैं शांति मेरा संस्कार है तो कल का सारा दिन कैसा रहेगा। आजकल रविवार ज़्यादा टेंशन वाला होता है या सोमवार ज़्यादा टेंशन वाला। 4-5 साल पहले भी लोग कहते थे हम शनिवार और रविवार का इंतज़ार करते हैं। फिर अब कहने लगे कि रविवार, सोमवार दोनों ही दिन चिंता परेशानी है। और अब हम कह रहे हैं रविवार, सोमवार से भी ज़्यादा मुश्किल है। सवाल खड़ा हो गया ना हमारे संस्कारों पर। जब कोविड आया और शुरू में लॉकडाउन लगा तो सबने सोचा हम घर बैठेंगे परिवार के साथ फिर हम कहने लगे कोविड क्यों आया। एक महीने के अंदर सबने कहा स्कूल कब खुलेंगे, ऑफिस कब खुलेगा, मुझे वापस जाना है कैसे हम इस घर में ऐसे बंद होकर बैठ सकते हैं।

लॉकडाउन का समय वो था, जब कुछ परिवारों ने अपने बिगड़े हुए रिश्ते बहुत सुंदर बना लिए और कुछ परिवारों ने अलग होने का निर्णय ले लिया। क्योंकि लॉकडाउन में हमें एक-दूसरे के संस्कार दिखाई देने लगे। एक-दूसरे को देखते थे तो कहते थे अच्छा आपमें ये वाली आदत भी है। क्योंकि रोज़ तो उतना मिलना नहीं होता था। संस्कार हमारी सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ है। क्योंकि संस्कार से हमारे मन की स्थिति बनती है। संस्कार से स्वास्थ्य बनता है। सबकुछ तो संस्कार से ही होता है।

आध्यात्मिक नियम है - संस्कार से संसार बनता है। मतलब मेरा संसार, मेरी दुनिया मेरे संस्कारों से बनती है। फिर सृष्टि भी उसी से ही बनती है।

नवाबगंज-गोंडा(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय 12 ज्योतिर्लिंग दर्शन कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कैसरगंज सांसद बृजभूषण शरण सिंह।

दिल्ली-ओम विहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पुलिस स्टेशन,पोंडा में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में एसएचओ तुषार व अन्य पुलिस कर्मियों के साथ ब्र.कु. विमला दीदी,सेवाकेंद्र संचालिका,ओम विहार दिल्ली, ब्र.कु. गीता बहन,पोंडा सेवाकेन्द्र संचालिका, कैप्टन शिव सिंह,नेवी तथा अन्य।

भोजुवीर-वाराणसी(उ.प्र.)। आध्यात्मिक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. अजय कृष्णा, श्रीमती अजय कृष्णा, ब्र.कु. वंदना दीदी, ब्र.कु. मीरा बहन व अन्य।

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। ब्र.कु. श्वेता बहन व ब्र.कु. करुणा बहन के दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह के दौरान भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष शरद माहेश्वरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन। साथ हैं नगरपालिका अध्यक्ष श्वेता चौधरी, समर्पित होने वाली बहनें व अन्य। कार्यक्रम में व्यापारी अमित गौतम, रामबाग के उपप्रधानाचार्य योगेन्द्र वार्ष्णेय, पीएनबी के पूर्व प्रबंधक राकेश अग्रवाल, ब्र.कु. हेमलता दीदी,इगलास, ब्र.कु. मीना बहन,रामपुर, ब्र.कु. दुर्गेश बहन, ब्र.कु. नीतू बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

नई दिल्ली-ग्रेटर कैलाश। दीपावली के शुभ अवसर पर चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान व उनकी धर्मपत्नी अनुपमा चौहान से मुलाकात कर ज्ञानचर्चा के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. संगीता बहन एवं ब्र.कु. मनोज भाई।

शीतलपुर-चकिया(बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनमाला का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जिला पार्षद निर्जला देवी, ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. अशोक वर्मा, ब्र.कु. रिंकू, ब्र.कु. उषा तथा अन्य।

नगर-डीग(राज.)। आचार्य श्री कन्हैयालाल शास्त्री जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हीरा बहन।

कुराली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से शहर में एनएमबीए बस द्वारा नशा मुक्ति केंद्र व अनेक कम्पनियों में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा सभी को नशे के प्रति जागरुक किया गया और राजयोग का अभ्यास कराया गया।

नया मुरादाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित दीपावली एवं योग भट्ठी कार्यक्रम में मेरठ ज़ोन प्रभारी ब्र.कु. आशा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. सुजाता दीदी तथा 200 से अधिक भाई-बहनें शामिल रहे।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये
Website: www.omshantimedia.org

परमात्म ऊर्जा

असन्तुष्टता का कारण यह होता है जो कोई की वाणी व संस्कार व कर्म देखते हो वो अपने विवेक से यथार्थ नहीं लगता है, इसी कारण ऐसा बोल व कर्म हो जाता है जिससे दूसरी आत्मा असन्तुष्ट हो जाती है। कोई का भी कोई संस्कार व शब्द व कर्म देख आप समझते हो- यह यथार्थ नहीं है व नहीं होना चाहिए; फिर भी अगर उस समय समाने की व सहन करने की शक्तियां धारण करो तो आपकी सहन शक्ति व समाने की शक्ति ऑटोमेटिकली उसको अपने अयथार्थ चलन का साक्षात्कार करायेगी। लेकिन होता क्या है वाणी द्वारा व नैन-चैन द्वारा उसको महसूस कराने व साक्षात्कार कराने लिए आप लोग भी अपने संस्कारों के वश हो जाते हो। इस कारण न स्वयं सन्तुष्ट, न दूसरा सन्तुष्ट होता है। उसी समय अगर समाने की शक्ति हो तो उसके आधार से व सहन करने की शक्ति के आधार से उनके कर्म व संस्कार को थोड़े समय के लिए अवॉयड कर लो तो आपकी सहन शक्ति व समाने की शक्ति उस आत्मा के ऊपर सन्तुष्टता का बाण लगा सकती है। यह न होने कारण असन्तुष्टता होती है। तो सभी के सम्पर्क में सर्व को सन्तुष्ट करने व सन्तुष्ट रहने के लिए यह दो गुण व दो शक्तियां बहुत आवश्यक हैं। इससे ही आपके गुण गायन होंगे। भले उसी समय विजय नहीं दिखाई देगी, हार दिखाई देगी। लेकिन उसी समय की हार अनेक जन्मों के लिए आपके गले में हार डालेगी। इसलिए ऐसी हार को भी जीत मानना चाहिए। यह कमी होने कारण इस सब्जेक्ट में जितनी सफलता होनी चाहिए उतनी नहीं होती है। बुद्धि में नॉलेज होते हुए भी किस समय किस रूप से किसको नॉलेज व युक्ति से बात देनी है, वह भी समझ होनी चाहिए। समझते हैं- मैंने उनको शिक्षा दी। लेकिन समय नहीं है, उनकी समर्थी नहीं है तो वह शिक्षा, शिक्षा का काम नहीं करती है। जैसे धरती देखकर और समय देखकर बीज बोया जाता है तो सफलता भी निकलती है। समय न होगा व धरनी ठीक नहीं होगी तो फिर भले कितनी भी बड़ी क्वालिटी का बीज हो लेकिन फिर वह फल नहीं निकलेगा। इसी रीति ज्ञान के प्वाइंट्स व शिक्षा व युक्ति देनी है तो धरनी और समय को देखना है। धरती अर्थात् उस आत्मा की समर्थी को देखो और समय भी देखो तब शिक्षा रूपी बीज फल दे सकता है। समझा!

सोनीपत-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जिला कारागृह में कैदियों को 'कर्म गति और व्यवहार शुद्धि' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में मुख्य वक्ता ब्र.कु. भगवान भाई,माउण्ट आबू, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू बहन, जेल उपाधीक्षक कृष्णा मान, वकील रामचंद्र रोहिला, रिटा. एयरपोर्ट डायरेक्टर प्रेम धमीजा, ब्र.कु. दीपा बहन, ब्र.कु. शिला बहन तथा अन्य पुलिसकर्मी।

कथा सरिता

सही राह

एक बार की बात है, जब गौतम बुद्ध जी मगध राज्य के एक गांव में ठहरे हुए थे। गांव से थोड़ा बाहर एक मोची अपने परिवार के साथ रहता था। उस मोची के घर के पास एक तालाब था। एक दिन रोज़ की तरह सुबह मोची तालाब किनारे पानी लेने गया। वहाँ उसने तालाब में एक बहुत ही अद्भुत पुष्प देखा। वह पुष्प देखने में बहुत ही सुंदर था और चमत्कारिक भी प्रतीत हो रहा था।

मोची ने तुरंत ही अपनी पत्नी को बुलाया और वह पुष्प उसे दिखाया। मोची की पत्नी आध्यात्मिक और धर्म में आस्था रखने वाली थी। वह पुष्प को देखते ही समझ गयी कि ज़रूर कल यहाँ से गौतम बुद्ध जी गुज़रे होंगे, उन्हीं के प्रताप से यह पुष्प खिला है।

पुष्प को चमत्कारिक मान कर मोची ने एक योजना बनाई। उसने अपनी योजना के बारे में पत्नी को बताया कि वह इस पुष्प को राजा को देगा और उनसे खूब सारी स्वर्ण मुद्राएं लेगा। उसकी पत्नी ने भी सोचा कि यह पुष्प उनके किसी काम का नहीं है। इसे राजा को ही दे दो, कम से कम कुछ कमाई तो होगी।

पत्नी की सहमति के बाद, मोची राजमहल की ओर निकल गया। राजमहल के रास्ते में उसे एक व्यापारी मिलता है, मोची के हाथ में पुष्प देख कर वह रूक जाता है। वह मोची से पूछता है कि भाई ये पुष्प लेकर कहाँ जा रहे हो? मोची कहता है कि मैं यह पुष्प लेकर राजा के पास जा रहा हूँ। इसे राजा को भेंट करके राजा से मुंह मांगा इनाम लूंगा।

व्यापारी ने मोची को प्रस्ताव दिया कि तुम ये पुष्प मुझे दे दो, बदले में मैं तुम्हें 100 स्वर्ण मुद्राएं दूंगा। मोची सोच में पड़ गया। उसने सोचा कि जब व्यापारी इस पुष्प के लिए 100 स्वर्ण मुद्राएं दे रहा है, तो राजा तो और ज़्यादा देगा। यही सोचते हुए उसने व्यापारी को पुष्प देने से मना कर दिया।

थोड़ा आगे चला ही था कि उसे रास्ते में राजा आते हुए नज़र आए जो गौतम बुद्ध के दर्शन के लिए जा रहे थे। राजा भी मोची के हाथ में वो दिव्य पुष्प देख कर अचंभित हो गये। राजा ने मोची को पुष्प के बदले 1000 स्वर्ण मुद्राएं देने के लिए कहा। यह सुनते ही मोची के मन में एक अजीब-सी चेतना आई। और वह राजा को पुष्प न देकर दौड़ता हुआ सीधे महात्मा बुद्ध के पास जा पहुंचा।

महात्मा बुद्ध जी मोची को देखकर हैरत में पड़ गये। उन्होंने मोची से पूछा तो मोची ने उन्हें सारी बात बताई। इसके बाद मोची ने वह पुष्प महात्मा गौतम बुद्ध के चरणों में अर्पित किया और उनसे कहा कि पहले तो मेरे मन में पुष्प को देखकर लालच आ गया था। लेकिन अब मैं समझ गया हूँ कि जिसकी छाया पड़ने से ही एक पुष्प इतना दिव्य हो गया हो अगर उसकी शरण में मैं चला जाऊं तो मेरा जीवन भी धन्य हो जायेगा। इसके बाद वह आजीवन महात्मा गौतम बुद्ध का शिष्य बनकर रहा।

कहानी से सीख : इस कहानी ने हमें सिखाया कि हमारी ज़िंदगी में हमें बहुत सी चीज़ें अपनी तरफ आकर्षित करती हैं, लेकिन हमें उनके लालच में न फंसकर अपने ज्ञान का प्रयोग करके जीवन में सही राह को चुनना चाहिए।

मुम्बई-घाटकोपर। भारतीय नौसेना के सामग्री अधीक्षक और सामग्री संगठन के अधिकारियों ने मुम्बई में 'एट होम नेवी वीक समारोह' में ब्रह्माकुमारीज़,योग भवन,मुम्बई घाटकोपर सबज़ोन को सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित किया, जो नौसेना और नागरिक,विशेष करके समाज में सकारात्मक योगदान देने वाले नागरिकों को जोड़ने का प्रयास है। इस दौरान राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,अति. निदेशिका,ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन ने कार्यक्रम में भाग लेकर सभी का मार्गदर्शन किया। इस मौके पर कोमोडोर गोकुल कृष्ण दत्ता,सामग्री अधीक्षक, नौ सेना के कर्मचारी व उनके परिवार सहित आमंत्रित नागरिक मौजूद रहे।

जालंधर-ग्रीन पार्क(पंजाब)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में विभिन्न प्रकार के खेल, डांस व ड्रामा का आयोजन कर धूमधाम से मनाया गया दीपावली का त्योहार। इस दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

पतरातू-पीटीपीएस(झारखंड)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा पतरातू डैम छठ घाट पर आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस मौके पर राष्ट्र संचेतना संस्था के अध्यक्ष राकेश प्रसाद द्वारा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रोशनी बहन, ब्र.कु. रीना बहन व ब्र.कु. रामदेव भाई को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से अध्यक्ष राकेश प्रसाद, डॉ. नारायण प्रसाद तथा अन्य सदस्यों को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय सौगात भेंट की गई।

पुखरायां-उ.प्र.। दीपावली महोत्सव कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करने व केक काटने के पश्चात् वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉ. अवध दुबे, समाज सेवी मधुसूदन गोयल, नगर अध्यक्ष प्रतिनिधि करुणा शंकर दिवाकर व अन्य मेहमानों को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. ममता दीदी, ब्र.कु. कोमल बहन, ब्र.कु. ललिता बहन व ब्र.कु. पूजा बहन।

नरवाना-हरियाणा। प्राकृतिक आहार एवं मेडिटेशन शिविर कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डीएसपी अमित भाटिया, ब्र.कु. सीमा दीदी, ब्र.कु. मीना बहन, रोटरी क्लब प्रधान राजेंद्र बंसल, सचिव दीपक मित्तल, मुख्य वक्ता जिग्नेश भाई व ब्र.कु. कृष्णा बहन।

ज़िंदगी की सफलता और लक्ष्य सिद्धि के चार आधार-स्तम्भ

एक युवा को ज़िंदगी में क्या करना, उसी उलझन में था। लक्ष्य सिद्धि के लिए जैसे-जैसे पढ़ता गया, वैसे-वैसे उसकी दुविधा बढ़ती गई। ज़िंदगी आखिर में है क्या? एक लक्ष्य निर्धारित करके उसके प्रति तन-मन-धन से समर्पित होना। ज़्यादातर लोग क्या करना, और क्या नहीं करना, उसी उलझन में उलझे रहते हैं। जीवन, ये कोई समस्या नहीं, समस्या का निराकरण खोज, लक्ष्य सिद्धि से परितुष्ट होने का अवसर है। गहरे पानी में बिना जाये न तो तैराक ही बन सकता, न ही मोती का सोधकार। 'जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ'। ये बात तीरे खड़े रह तमाशा देखने से समझ आये। गहरी नदी या गहरे सागर की लहरें देख डरने वाले कभी किनारे नहीं पहुंच सकते। कवि हरिवंश राय बच्चन ने ठीक ही कहा है कि 'तीर पर कैसे रुकूं मैं, आज लहरों में नियंत्रण'। बिना चुनौतिपूर्ण जीवन, ये तो मलाले लोगों को ही भाता है, मर्द को नहीं। जीवन का एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित कर, परमात्मा द्वारा दी हुई तमाम शक्तियों का उसमें प्रयोजन करना, यह ध्येय सिद्ध करने का उत्तम मार्ग है।

उस युवा को ध्येय सिद्ध करना है तो ध्येय सिद्धि के लिए चार स्तंभ क्रमबद्ध उसके लिये यत्न और प्रयत्न करना होगा। जीवन में गति और प्रगति का चार स्तंभ इस तरह है: **1. कंसिव, 2. पर्सिव, 3. रिसीव, 4. अचीव।**

1. कंसिवः- कंसिव, यानी कि नये विचार को धारण करना। बासी मन नये विचार को धारण नहीं कर सकता। इसलिए मन को तरोताज़ा रख, नया-नया चिंतन करते रहो। इस चिंतन में से ही नये विचार प्रस्फुटित होंगे। उन्हें समझने का प्रयत्न करें। साथ ही उनके प्रति मजबूत मनोबल गढ़ें। उन्हें आत्मसात करने का दृढ़ संकल्प करें। ये ध्येय प्राप्ति और लक्ष्य सिद्धि का प्रथम सोपान है। कंसिव, यानी इन विचारों में तन्मय रहें, एकाग्र रहें, प्रसन्न मन से नये विचार को अपनाएं।

2. लक्ष्य सिद्धि या ध्येय सिद्धि का दूसरा सोपान 'पर्सिव'। जिसका अर्थ है, आये हुए नये विचार को अच्छी तरह से समझना, उसके प्रति जानना, उसकी सत्यता की प्रतीति करना।

मनुष्य के मन में प्रति मिनट तीस से चालीस विचार आते हैं। उनमें से सिर्फ एक या दो विचार ही श्रेष्ठता के लिए होते हैं। उन्हें नव-पल्लिवत करें तो जीवन में खुशहाली, हरियाली आ जायेगी। जिससे मन पसंद ज़िंदगी पाने की सक्यता बढ़ जाती है।

विचार करना, ये ऊपरछल्ले प्रयत्न नहीं लेकिन गम्भीर मानसिक कसरत है। क्योंकि अपनी ज़िंदगी का नक्शा उससे ही बनता है। जीवन, ये एक कोरी स्लेट है, वो सिर्फ लकीरें खींचने के लिए नहीं, पर स्वर्णिम अक्षरों से व श्रद्धा से लेख लिखने का साधन है। श्रद्धा, सत्य की ओर, श्रेष्ठ की तरफ गति कराती है। और श्रद्धा के साथ सुमेल साधकर, मन में आये हुए विचार की तरफ जाग्रत रहकर गढ़ें तो आप अपने सपनों को आगे दिशा दे सकते हैं।

3. रिसीव : रिसीव यानी कि प्राप्त करना। मनुष्य को जो प्राप्त है, उसका मूल्यांकन करना पड़े, उसको एनालाइज़ करना पड़े। जो मिला है, वो हितकारक, सर्व जन के लिए कल्याण कारक और शुद्ध इरादे से प्राप्त हुआ है। उसका मूल्यांकन करना पड़े। रिसीव का मतलब संतुष्ट होकर बैठ जाना, आराम करना नहीं है। लेकिन जो कुछ मिला है, उसके प्रति वैचारिक सजगता से साथ गढ़ते हुए उसका दिशा-दर्शन है। जो कुछ मिला है, उसे चेक करें, कसौटी करें, रुकें और उसके बाद सफलता के लिए आगे बढ़ें। महात्मा गांधी का 'क्विट इंडिया' का सूत्र अंग्रेजों को ललकारने के प्रबल सूत्र पर आधारित था। जो कि मिले हुए शुद्ध विचार व साधन के प्रयोग का परिणाम था। इस तरह आत्म-दर्शन करना, ये रिसीव हमें सलाह देती है।

4. अचीवः अचीव यानी कि सफलता पूर्वक प्राप्त करना। जो मिला है, वो आपकी सोच के अनुरूप है या उसके विरुद्ध है उसपर सोचना। जो सफलता आपको मिली है उसपर चिंतन करना और देखना कि कोई अर्धसफलता है या पूर्णसफलता है। और फिर आगे प्रयत्न चालू रखना। सिद्धि, ये एक फ्लैग-स्टेशन है और महासिद्धि, ये एक जंक्शन है। फ्लैग-स्टेशन पर सब गाड़ियां रुकती नहीं, लेकिन जंक्शन पर अनेक गाड़ियों का संगम होता है। और आप अपेक्षित गाड़ी में सवार होकर ज़रूरी स्थान तक पहुंच सकते हैं। जीवन, ये निरंतर यात्रा है। जो कि किसी को पड़े रहने नहीं देती। पड़े रहना यानी कि पतन के मार्ग को निमंत्रण देना है। इस तरह लक्ष्य सिद्धि के चार सोपान हैं।

कंसिव यानी कि नया विचार मन में धारण करना। पर्सिव यानी कि मन में धारण किये हुए विचार की समझ, उसकी अवेयरनेस रखना और उसका स्वरूप आत्मसात करने के लिए सावधानी रखना। रिसीव यानी जो मिला हुआ है, उसका विश्लेषण करना और उसकी शुद्धता की जांच करना। अचीव यानी कि सफलता पूर्वक प्राप्त करना।

सारनाथ-वाराणसी(उ.प्र.)। देश की अग्रणी विद्युत कम्पनी पॉवरग्रीड के द्वारा आरकेडिया होटल स्थित सभागार में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यशाला 'नेक्स्ट इनिंग्स' में सभी का मार्गदर्शन करने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ सारनाथ से मोटिवेशनल ट्रेनर ब्र.कु. तापोशी बहन, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र भाई एवं ब्र.कु. विपिन भाई को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में पॉवरग्रीड के मुख्य प्रबंधक मानव संसाधन नीरज पाण्डेय, एच.आर. हेड विनोद जी, ब्र.कु. राधिका बहन, ब्र.कु. संदीप भाई सहित देशभर से आए वरिष्ठ अधिकारी एवं उनके परिवार शामिल रहे।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के विश्व शांति धाम सेवाकेन्द्र में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया दीपावली का त्योहार। इस दौरान स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज दीदी, ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. राधा बहन सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे। इस अवसर पर भाई-बहनों द्वारा सुंदर नाटिका, नृत्य और गीत की प्रस्तुति दी गई।

फारबिसगंज-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जे.पी. मेमोरियल पब्लिक स्कूल में 'जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्त्व' विषय पर मुख्य वक्ता राजयोगी ब्र.कु. भगवान भाई ने छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों को सम्बोधित किया। इस मौके पर डायरेक्टर अभय सिन्हा, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र की ब्र.कु. रुकमा बहन, ब्र.कु. श्याम भाई, ब्र.कु. आदित्य भाई, ब्र.कु. इंदु माता, सुमन बहन आदि उपस्थित रहे।

मिर्जापुर-उ.प्र.। 39वीं वाहिनी पीएसी के 43वें स्थापना दिवस समारोह में ब्रह्माकुमारीज़ को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। इस मौके पर डीएम आईएएस श्रीमती प्रियंका निरंजन, एसपी आईपीएस अभिनंदन जी, 39वीं वाहिनी पीएसी के कमांडेंट आईपीएस ब्र.कु. विकास कुमार वैद्य, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बिंदु बहन, होमगार्ड कमांडेंट बी.के. सिंह आदि मौजूद रहे। इस दौरान ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का आयोजन कर सभी को आध्यात्मिक ज्ञान एवं परमात्म संदेश दिया गया। डीएम एवं एसपी ने फीता काटकर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया। ब्र.कु. राजकन्या दीदी ने प्रदर्शनी समझाई। कार्यक्रम में लगभग 500 पुलिस के जवान मौजूद रहे।

रोहतक-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ रोहतक शीला बाईपास सेवाकेन्द्र पर राष्ट्रीय पत्रकारिता दिवस के अवसर पर आयोजित मीडिया सेमिनार में संजीव सैनी,डी.पी.आर.ओ, देवराज जी,प्रेसिडेंट ऑफ पेंशनर समिति, वरिष्ठ पत्रकार मनमोहन कथुरिया, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. सुशांत भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन, ब्र.कु. सीमा बहन, ब्र.कु. कुसुम बहन, ब्र.कु. मोनिका बहन, ब्र.कु. वासुदेव भाई सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

ऋषि और राजऋषि के बीच की स्थिति

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

मान्यता है कि जब एक समय में व्यक्ति अपने आसपास के वातावरण से तंग होता है, तो वो सबकुछ छोड़ना चाहता है। और एक पहला ऐसा भी समय होता है जिसमें उसे सबकुछ चाहिए। व्यक्ति को हर पल एक चीज़ की तलाश है, वो है सुख, केवल सुख। व्यक्ति सुख से ही बना है, क्योंकि जो उपरोक्त दोनों चीज़ें हैं उसमें पकड़ना और छोड़ना, दोनों उसके सुख की ही निशानी है। एक समय में उसको सबकुछ चाहिए, एक समय में उसको कुछ नहीं चाहिए। और इस सुख की तलाश में ऋषि-मुनियों ने घर को त्यागा, तपस्वी बने लेकिन तपस्वी बनना सुख की निशानी ही है। परमात्मा निराकार शिव ब्रह्माकुमारीज़ में हम सबको इसी बात के लिए रोज़-रोज़ ज़ोर देते हैं कि आप सभी घर-गृहस्थ में रहते हुए, सारे कार्य करते हुए, सभी को सम्भालते हुए ऋषियों का जीवन जियो। शिव परमात्मा हमें सिखाते कि आप राजऋषि हो। राजऋषि का अर्थ बताते कि जो राजा भी हो और ऋषि भी हो। कार्य करते हुए अपनी इंद्रियों पर राज्य करना और ऋषि बनकर निरंतर परमात्मा की याद में खुद को रखना।

परमात्मा का ये कहना सत्य इसलिए भी है कि जिस चीज़ से हम भाग रहे हैं वो तो स्थूल चीज़ें हैं, जो हमको परेशान नहीं कर रही हैं, लेकिन उनको सम्भालने का, उनको देखने का, उनका ध्यान रखने का विचार हमको तंग कर रहा है। क्योंकि जंगल में कोई गैरंटी तो ऐसी दी नहीं गई है कि वहां पर हमको कोई तंग नहीं करेगा, वहां पर भी मक्खी-मच्छर होंगे, और भी जीव-जंतु हो सकते हैं। तो क्या आप वहां पर इन विचारों से खौफ नहीं खायेंगे! बल्कि घर में रहना, जिनके बीच में हम सालों से रह रहे थे, और ज़्यादातर हम सबके संस्कारों को समझ भी गये थे, उनके साथ जीना क्या मुश्किल है! क्योंकि तपस्या उसे ही कहा जाता है, जिसमें व्यक्ति परिस्थितियों के बीच में रहे भी और उसपर उसका प्रभाव भी न पड़े। इसका बहुत सुंदर एक तरीका शिव बाबा हमको समझाते हैं कि आप सबके संस्कारों से बेपरवाह बनो। लेकिन कार्य के प्रति अलर्ट। माना कभी भी लापरवाह नहीं बनो। जैसे आपको पता है कि सुबह से लेकर शाम तक ये कार्य मैं अगर नहीं करूंगा या फिर छोड़ दूंगा तो ये ऐसे ही रह जायेगा। और ज़्यादातर घर में, गृहस्थ में डिस्टर्ब होने का मात्र एक कारण है कि 'मैं ही करूं'! अब आप नहीं करेंगे, कोई बात नहीं। लेकिन आप ये सोचें कि उस समय जो आपके व्यर्थ संकल्प चलेंगे उसका प्रभाव आपके ऊपर ही तो पड़ेगा। तो वो कार्य आप जल्दी से करके अन्य कार्यों में लगकर अपना समय और संकल्प दोनों बचा सकते हैं। तपस्या इसे ही कहा जाता है।

कोई व्यक्ति बाधा नहीं है लेकिन व्यक्ति के साथ जो हमारा सम्बंध है वो हमारे अंदर बाधा उत्पन्न करता है। मेरे को ही सब करना है, ऐसा सोच-सोच कर हम भारी हुए रहते हैं। कई बार हो सकता है कि जो बातें हमने बोलीं वो आपको फिट नहीं लग रही हों, लेकिन आप ही बताओ कि इसका कोई और उपाय है? फिर भी आप सोचते ही रहेंगे। बुद्धिमानी ये है कि मुझे अपने संकल्पों को बचाना है। क्योंकि आप जिसके साथ रह रहे हैं उसे आप छोड़ नहीं सकते, इस अर्थ में कि कोई बहुत अज़ीज़ है उसको हम कैसे छोड़ेंगे! तो इस अवस्था में हमको क्या करना चाहिए? जितना हो सकता है उतना करें और अपने संकल्पों को बचायें। इसका भक्ति में दिखाया है कि लोग परेशान हुए और घर छोड़कर चले गये। लेकिन हम लोगों के संस्कारों की परवाह न करते हुए जो शिव बाबा की श्रीमत है उस अनुसार घर का वातावरण बनाने के लिए कार्य करें और धीरे-धीरे हो सकता है कि उनके संस्कारों में भी वो बदलाव आये जैसा हम चाहते हैं। इसलिए तपस्या राजऋषि ही कर सकता है, जो अपनी इंद्रियों का राजा है, जिसके पास ये बुद्धिमानी है कि मुझे कार्य करके निकल जाना है। उदाहरण के लिए यदि आपके घर में कोई बच्चा कितने भी कड़े संस्कार वाला है, फिर भी आप उसको सम्भालते हुए कार्य करते हैं ना! उसी प्रकार हम ये मानकर चलें कि चाहे कोई बड़ी उम्र का है चाहे छोटी उम्र का है लेकिन उसकी स्थिति एक बच्चे जैसी ही है। उनके संस्कार अलग-अलग हैं। किसी का भाव-स्वभाव आपके प्यार को खत्म नहीं करे। प्यार अर्थात् शुभभावना ज़रूर हो। क्योंकि अगर परिवार में प्यार नहीं तो परिवार नहीं। इसलिए तपस्वी, राजऋषि बनने का सबसे सहज और आसान तरीका, संकल्पों को व्यर्थ जाने से बचाना है, कार्य करके निकल जाना है, और अपने पास जितना समय हो उसे ज्ञान और योग में लगाना है, तब बनेंगे सच्चे राजऋषि।

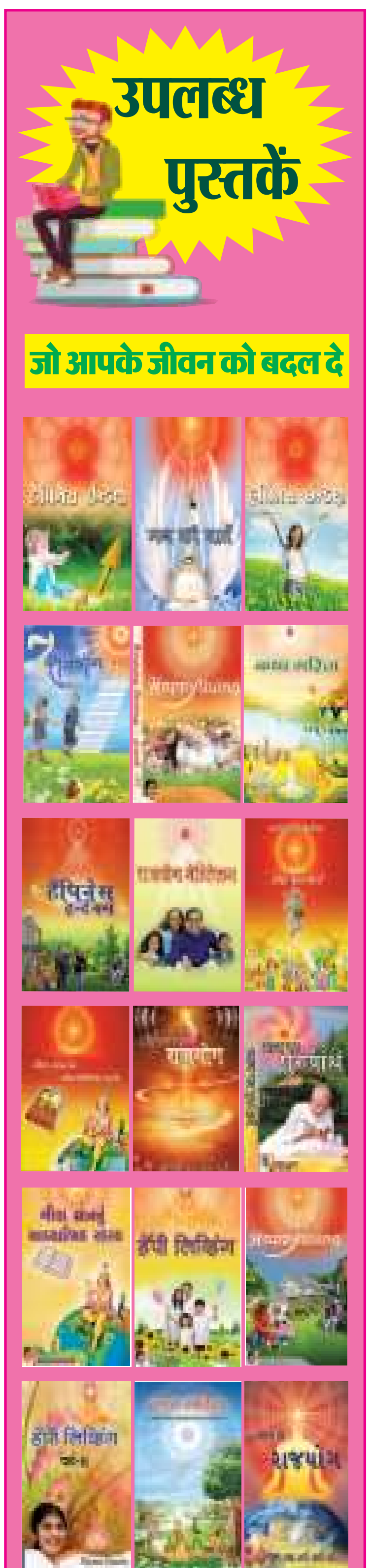

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मेरा नाम दीपाली है। मेरी 28 लोगों की एक ज्वॉइंट फैमिली थी। मेरा सबके साथ बहुत प्यारा रिलेशन था। लेकिन पिछले कुछ समय से उनका जो व्यवहार है मेरे प्रति बिल्कुल चेंज हो गया है और उसके कारण हम अलग भी हो गए हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा है ऐसा क्यों हुआ, अब मैं बहुत दुःखी और बीमार रहने लगी हूँ। इसका क्या समाधान हो सकता है कि मैं अपनी इस शारीरिक बीमारी से भी दूर होऊं और मेरे जो रिलेशन थे सबके साथ वो पुनः प्यारे हो सकें?

उत्तर : बड़े संगठन में एक समस्या आम होती है भले आपकी फैमिली 28 लोगों की है, लेकिन हर मनुष्य अलग-अलग होगा। संगठनों में मनुष्य एक चीज़ का शिकार हो जाया करते हैं वो है ईर्ष्या, द्वेष, मुझे नहीं पता कि आपकी स्थिति क्या है। ईर्ष्या के ही कारण दूसरों को देख कर खुश नहीं होते।

एक बहुत अच्छा ईश्वरीय महावाक्य आपको याद रखना चाहिए, स्व स्थिति श्रेष्ठ होगी तो परिस्थितियां स्वतः ही बदल जायेंगी। आपके सामने ये बात आई है तो निश्चित रूप से किसी मनुष्य की बहुत महिमा होती है तो उसे ग्लानि के लिए भी तैयार रहना ही चाहिए। सदा इस संसार में महिमा किसी की नहीं होती है। सदा ही किसी की निंदा भी नहीं होती। इसलिए पहली चीज़ है आप अपने को हल्का करें। और इसके कारण जो आपने अपने ऊपर ज़्यादा ले लिया है, जिसके कारण आपको टेंशन रहने लगी है, एनीमिक हो गई हैं। बीपी भी हो गया है। मनुष्य को पता क्या होता है वो अनुमान ज़्यादा लगाता है। और सोचता ज़्यादा है। बात कुछ और होती है और सोचता कुछ और है। ज़्यादा सोचने की आदत छोटी बात को बड़ा बना देती है। इसलिए इससे बचना चाहिए। आपने बहुत अच्छे दिन देखे हैं लेकिन बुरे दिन हमें बहुत कुछ सिखाते भी हैं। अगर हम ये लक्ष्य रख लें कि हमें अपने मन की स्थिति को बिगाड़ना नहीं है, तो वो जो बुरी चीज़ें हमारे सामने आ रही हैं वो हमारे बहुत अच्छे शिक्षक बन जायेंगी। हमें बहुत पॉवरफुल बनाने का आधार बन जायेंगी। और हम फिर आगे बढ़ जायेंगे। क्योंकि बुरे दिन सदा ही नहीं चला करते, खत्म हो जाते हैं।

आप हर रोज़ सेवाकेन्द्र पर ईश्वरीय महावाक्य सुनने जायें। उससे क्या होता है सवेरे-सवेरे जब हम अच्छी-अच्छी बातें सुनते हैं तो उनके प्रभाव से जो निगेटिविटी होती है वो समाप्त हो जाती है। आपको एक काम और करना है, आपके घर में जो वायब्रेशन थोड़े निगेटिव हो गये हैं चाहे आपके कारण हो गये हैं या फिर दूसरों ने क्रिएट कर दिए होंगे। अब आप वहाँ बैठकर कुछ अच्छे वायब्रेशन क्रिएट करेंगी। और इसकी विधि मैं बता रहा हूँ, आप अपने घर में पाँच बार तो शिव बाबा का, ब्रह्मा बाबा का आह्वान करें। बहुत प्यार से निमंत्रण दें कि आप हमारे घर में आ जाओ और फील करो कि दोनों आकर खड़े हो गये हैं। उनके अंग-अंग से किरणें फैल रही हैं। और जैसे पूरा घर उस प्युअर एनर्जी से भर गया है। 1-2 मिनट भी करेंगी तो आपको बहुत सुखद अनुभव होगा।

दूसरे कुछ स्वमान के अभ्यास हैं- जैसे मैं मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ, मेरे अंग-अंग से रंग-बिरंगी किरणें फैल रही हैं। इसका कई बार अभ्यास कर लें, घर में वातावरण बदलने लगेगा। दूसरा स्वमान है, मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ, मुझसे पवित्र किरणें निकल पूरे घर में फैल रही हैं। तीसरा संकल्प है, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। मुझसे शक्तियों की किरणें पूरे घर में फैल रही हैं। ये तीन संकल्प और बापदादा का आह्वान ये चारों चीज़ें पाँच बार अवश्य कर लें। इससे आपके घर का वातावरण बहुत अच्छा हो जायेगा। सवेरे उठें और अपने 27 मेम्बर्स को आत्मिक दृष्टि से देखें। ये भी आत्मा, ये भी आत्मा, ये भी चमकती ज्योति, ये भी चमकती ज्योति, फिर संकल्प करें कि ये सब बहुत अच्छी आत्मायें हैं। और ये सब मुझे बहुत प्यार करते हैं तो इससे क्या होगा उनके अन्दर जो निगेटिविटी भर गई है वो धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगी।

प्रश्न : मैं अजीत हूँ। मेरी प्रॉब्लम ये है कि मैं अमृतवेले नहीं उठ पाता हूँ और रात को योग करके भी सोता हूँ लेकिन फिर भी मेरी सुबह ये प्रॉब्लम बनी रहती है। रात को सोते समय बहुत बुरे विचार चलते हैं और कई बार मैं गलत कार्य कर लेता हूँ। मैं क्या करूँ?

उत्तर : देखिये ये बहुत युवकों की समस्या हो गई है। क्योंकि बहुत युवकों का जीवन अनेक बुरी आदतों से ग्रस्त हो जाता है। अब वो बतायें भी किसको। ना माँ को बता सकते, ना टीचर्स को, तो वो घुटते रहते हैं। कईयों को तो ऐसी गन्दी आदत लग जाती है कि बस वो उसके ऐसे शिकार हो जाते हैं जैसे शराबी शराब के वश हो जाता है। हम आपको अवश्य मदद करना चाहेंगे। पहली प्रैक्टिस तो ये करनी है कि कोई भी गन्दी पुस्तकें नहीं पढ़नी हैं। बैन लगा दें अपने ऊपर कि न कोई गन्दी पिक्चर देखनी और न कोई गन्दी किताबें पढ़नी हैं। न कोई जो ऐसी गन्दी बातें करते हैं उनके संग में आना है।

रात को सोने से पहले एक तो आप पानी को चार्ज करके पियेंगे। पानी को दृष्टि दें और सात बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, पानी में प्युअर वायब्रेशन भर गये फिर इसको पियेंगे और संकल्प करेंगे कि इससे मेरी नींद बहुत अच्छी हो, मेरी नींद स्वप्न रहित हो, स्वप्न आयें तो वो बहुत सतोप्रधान स्वप्न हों। बहुत सुन्दर स्वप्न हों। दूसरा सोने से पहले आपको 15 मिनट मेडिटेशन अवश्य करना है। घूम-फिर के करें तो बहुत अच्छा। और उसमें भी पाँच स्वरूपों का अभ्यास।

आप पाँच स्वरूपों से अच्छी तरह से परिचित हैं ही। पाँच स्वरूपों का अभ्यास करने से मन में आनंद की लहरें उठने लगती हैं। और जब मन आनंदित होता है तो ये जो बुरी आदतें मनुष्य को लगी हुई हैं ये छूटने लगती हैं। बाकी ये विशेष बुरी आदत से छूटने के लिए आपको दिन में भी कभी 15 मिनट खास अभ्यास करना है। मैं परमपवित्र आत्मा हूँ और शिव बाबा की पवित्रता की किरणें मुझपर आ रही हैं। और जैसे अपने मन को आदेश दे दें कि मैं स्वराज्य अधिकारी भी हूँ, क्योंकि ये गन्दी आदतें मन में हैं। संस्कार भी मन में रहते हैं कि मैं तो अब परमपवित्र आत्मा हूँ, अब मुझे ऐसा कोई काम नहीं करना है जो पवित्रता के विपरित हो। मैं तो देवत्व को प्राप्त करने वाली देव कुल की आत्मा हूँ। ऐसे बार-बार संकल्प अपने अन्दर भरने से आपको मदद मिलेगी। और इस 15 मिनट के स्पेशल योग से आपमें बल आयेगा। इसके प्रति अपने आपको पूरा डेडिकेट कर लें कि ये तो मुझे करना ही है। तो थोड़े अभ्यास से इसमें सफलता हो जाती है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

मानसिक रोगों का समाधान...

मन है एक बहुत बड़ी शक्ति

वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

हम मानसिक रोगों की चर्चा आगे बढ़ा रहे हैं। मानसिक रोगों का सम्बन्ध हमारे ब्रेन से भी है, और मन से भी है, हमारे कर्मों से भी है, हमारे चिंतन से भी है, हमारे एटीट्यूड से भी है, हमारी नेचर से भी है। हमारे संस्कार कैसे हैं, ज़्यादा सोचने के, ज़्यादा परेशान रहने के, ज़्यादा चिंता करने के, भविष्य के बारे में, डर के कैसे संस्कार हमारे हैं। उन सबसे भी उन रोगों का गहरा सम्बन्ध है।

हम आ जाते हैं इसके थोड़ा समाधान पर। आप सबको अच्छे से ख्याल में आ जायेंगी ये बातें। हमारा ईश्वरीय ज्ञान जो है वो बहुत कॉम्प्लिकेटेड नहीं है। और हम जो सब्कॉन्शियस माइंड के लेवल पर इन चीज़ों का इलाज कराते हैं वो हमने बहुत सिम्पल कर दिया है, बहुत इज़ी कर दिया है। वो जो साइकोलोजिस्ट की भाषा वो एक आम व्यक्ति को समझ में नहीं आती। वो हम बहुत सिम्पल कर रहे हैं। तो हम जानते हैं और हमें जानना चाहिए कि जब मनुष्य सवेरे उठता है तो दस मिनट तक उसका सब्कॉन्शियस माइंड यानी अवचेतन मन, मैं इसके लिए शब्द यूज़ करूंगा 'अंतरमन' जगा रहता है, एक्टिव रहता है। और सोने से पहले भी वो जगना प्रारम्भ हो जाता है। जैसे-जैसे हम नींद की ओर बढ़ते हैं, एक्टिव हो जाता है। अब ये दो टाइम हमारे पास बहुत ही सुन्दर हैं जीवन के। जो राजयोग का अभ्यास करते हैं, मेडिटेशन करते हैं उनके लिए वो समय भी बहुत सुन्दर होता है। मन एकदम एकाग्र हो जाये। मन एकदम शांत होकर परमात्म स्वरूप पर स्थिर हो जाये। तब भी उनका अंतरमन जाग्रत हो जाता है। हम इन चीज़ों का फायदा उठायेंगे। उस टाइम हम अपने सब्कॉन्शियस माइंड को जो कमांड दे देंगे वो उन्हें स्वीकार करेगा। वो हमारे ब्रेन के लिए बहुत बड़ी शक्ति बन जायेगी। जो ब्रेन डैमेज हुआ, जो माइंड में कुछ गड़बड़ हुई है वो सब चीज़ें भरने लगेंगी, रिपेयर होने लगेंगी।

थॉट्स हमारे ब्रेन की बहुत बड़ी रिपेयरिंग मशीनरी है। इसको सभी समझ लें तो सवेरे जैसे ही आप उठें, जो चार बजे तक उठ जाते हैं बहुत अच्छा लेकिन जो नहीं उठते वो छह बजे तक तो अवश्य उठ जायें। क्योंकि 6 बजे के बाद तो सब उठने लगते हैं, सूरज निकलने लगता है और संसार में बैड एनर्जी भी जागृत हो जाती है। जो लोग बहुत लेट उठ रहे हैं और उठते ही व्हाट्सएप्प पर, न्यूज़ पेपर पर या टीवी पर कुछ देखने लगते हैं तो उनके अन्दर तो तुरंत बैड एनर्जी आ जाती है। इसलिए एक आम व्यक्ति को चाहे वो राजयोग

> **मन हमारा बहुत बड़ी चीज़ है। एक बहुत बड़ी शक्ति हमारे पास है। इसमें हम श्रेष्ठ संकल्पों के खज़ाने को भरें। निगेटिव संकल्प हमारे मन को कमज़ोर करते हैं। तो हम न ज़्यादा सोचेंगे ऐसी मेंटालिटी हम अपनी तैयार करें।**

करें या न करें। चाहे उनको भगवान में विश्वास हो या न हो। चाहे वो नास्तिक हों, वो उठते ही10-15 मिनट ऐसा कुछ न सोचें, ऐसा कुछ न देखें जिससे अन्दर में बैड एनर्जी चली जाये। युवकों को आदत होती है, उठते ही व्हाट्सएप्प देखना, चेक करना क्या-क्या मैसेज आये, क्या फेसबुक पर आया, स्टेटस में क्या-क्या आया। ये सब गलत विधियां हैं, जीवन को नष्ट करने वाली चीज़ें हैं। जिन्होंने ऐसा किया है उन्हों के जीवन नष्ट हो गये हैं। 35 साल की उम्र में युवक बेकार हो गये हैं।

लेकिन अब सवेरे उठते ही बस पहले दस मिनट में आपको लिखना है मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। जो इस शब्द को नहीं समझते उनको लिखना है, मैं बहुत शक्तिशाली हूँ। अगर मान लो नहीं लिखा जा रहा है, डिप्रेशन बहुत गहरा है। तो 21 टाइम से शुरू करें। हर रोज़ दस बढ़ा दें। 31, 41 तो इससे क्या होता है ब्रेन को पॉवरफुल एनर्जी जाने लगेगी। वो ब्रेन को रिपेयर करने लगेगी। पॉवरफुल करने लगेगी। आपके ब्रेन को एक्टिव करने लगेगी और आपका ब्रेन फिर से अच्छा होने लगेगा। ऐसे ही सोने से पहले भी 108 बार लिखें और फिर सोने जायें। ये बिल्कुल नियम बना लेना चाहिए। क्या है ये मास्टर सर्वशक्तिवान की बात, ये कोई मंत्र नहीं है, ये कोई काल्पनिक चीज़ नहीं है। हम भगवान के बच्चे हैं। हम उसे परमपिता कहते हैं ना, गॉड फादर कहते हैं। हम उसकी संतान हैं तो जो शक्तियां उसमें हैं उसका बहुत बड़ा हिस्सा हममें भी होता है। भगवान ने हमें बनाया था तो परफेक्ट बनाया था। गड़बड़ हमने की है। हम हिंसक हो गये, बुरे काम करने लगे, नेक काम करने भूल गये तो ये सब हमसे विस्मृत हो गया। तो हम सर्वशक्तिवान भगवान की संतान हैं, ये सत्य सभी स्वीकार करें। जो इसको स्वीकार नहीं करेगा उसका डाउन फॉल होता ही जायेगा, ये सत्य है।

हम बहुत पॉवरफुल हैं, हम समस्याओं से भी अधिक पॉवरफुल हैं। हम कुछ भी सहन करने में सक्षम हैं। अगर हम बहुत पॉवरफुल होकर रहेंगे तो बड़े से बड़ी बीमारी भी आयेगी तो हम निगेटिव नहीं होंगे। अगर हम पॉज़िटिव रहेंगे, कैंसर हो गया, चौथी स्टेज पर हैं हम मस्त रहेंगे। हम ये चीज़ सिखाते हैं, बहुत लोग ठीक हो गए। जिनको डॉक्टर ने कहा था कि बस पूरा हुआ खेल। वो दस साल जिए। तो अपने मनोबल को बढ़ा-चढ़ा कर रखना है। यहाँ खुशी, विलपॉवर और शक्तिशाली माइंड बड़ा काम करेगा।

हम अपने मन को कमज़ोर न होने दें। मन हमारा बहुत बड़ी चीज़ है। एक बहुत बड़ी शक्ति हमारे पास है। इसमें हम श्रेष्ठ संकल्पों के खज़ाने को भरें। निगेटिव संकल्प हमारे मन को कमज़ोर करते हैं। तो हम न ज़्यादा सोचेंगे ऐसी मेंटालिटी हम अपनी तैयार करें। जब आप ये सवेरे और शाम को लिखेंगे 108 बार, धीरे-धीरे भले लिखेंगे, आपको बहुत एनर्जेटिक फील होगा। ऐसे मैंने बहुत सारे केस देखे। कोई तो सात दिन में ठीक हो गए, कोई ग्यारह दिन में, कोई इक्कीस दिन में। और जिनसे हुआ नहीं वो तीन मास में ठीक हो गए। तो बहुत विश्वास के साथ ये लिखने का काम शुरू करेंगे।

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। द टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. डॉ. गुरचरण सिंह को एक्सीलेंस इन एनेस्थीसिया विद स्पीरिचुअलिटी के क्षेत्र में योगदान के लिए 'द टाइम्स ऑफ इंडिया क्रूसेडर्स ऑफ हेल्थ' अवॉर्ड से भारत सरकार के नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया द्वारा सम्मानित किया गया।

रूड़की-उत्तराखंड। मीडिया सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए बायें से वरिष्ठ पत्रकार गोपाल नारसन, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. डॉ. शांतनु भाई, खानपुर के विधायक उमेश कुमार, राज्यसभा सांसद सदस्या कल्पना सैनी, ब्र.कु. मीना बहन, भगवानपुर विधायक ममता राकेश तथा ब्र.कु. गुरचरण बहन।

फैज़ाबाद-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि दीदी को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए श्री श्री 1008 श्री सत्येन्द्र दास जी महाराज,मुख्य पुजारी,श्री राम जन्म भूमि अयोध्या। साथ हैं ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय भाई,कार्यकारी सचिव,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. शिविका बहन,मुख्यालय संयोजिका,शिक्षा प्रभाग तथा अन्य।

इंदौर-इंद्रपुरी कॉलोनी(म.प्र.)। विधायक मधु वर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट कर बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए ब्र.कु. पूर्णिमा बहन, ब्र.कु. सीमा बहन एवं डॉ. सतीश पाठक।

शांतिवन। भोसले पाटेकर बिल्डर्स एवं डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर बाबासाहेब महादेव भोसले,मुम्बई को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. दिलीप भाई।

झोझूकलां-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज़ के उत्तरी क्षेत्र के पूर्व निदेशक राजयोगी ब्र.कु. अमीरचंद भाई के तीसरे पुण्य स्मृति दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ व समाज सेवा समिति झोझूकलां के संयुक्त तत्वाधान में सेठ किशन लाल वाले मंदिर झोझूकलां में आयोजित रक्तदान शिविर का स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन, सांगवान खाप तेरह के प्रधान सूरजभान सांगवान, पूर्व प्रवक्ता लक्ष्मी, योग शिक्षक मित्रसेन, मा. सुरेंद्र आर्य चंदेनी, समाज सेवा समिति के अध्यक्ष मा. संजू, मा. सुनील आदि ने रिबन काटकर शुभारंभ किया एवं ब्र.कु. अमीरचंद भाई को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर 25 लोगों ने रक्तदान किया। सभी रक्तदाताओं को बैज लगाकर एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

नेपाल-बीरगंज। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में भारतीय महावाणिज्यदूत देवी सहाय मीना, वार्ड कमिश्नर प्रदीप चौरसिया, राजयोगिनी ब्र.कु. रवीना दीदी सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

चक्रधरपुर-झारखंड। ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला में 'विद्यार्थियों के लिए जीवन मूल्यों की आवश्यकता' विषय पर स्कूली बच्चों के लिए आयोजित प्रेरक वार्ता में डॉ. विजय सिंह गागराई तथा ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

चरखी दादरी-हरियाणा। दीपावली के अवसर पर केक काटते हुए ब्र.कु. प्रेमलता बहन, जैविक खेती उत्पादक भीम भाई, डॉ. बाला, पूर्व इंस्पेक्टर अशोक जी, पूर्व बीईओ रोशनी शर्मा तथा अन्य।

इंदौर-अमितेश नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में आयोजित दीपावली कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. श्रुति बहन, प्रो. डॉ. निश्चित दुबे, डॉ. रेखा दुबे तथा अन्य।

लोक जागरण और लोकोपकार करना मीडिया का प्रमुख कार्य : प्रो. बल्देव शर्मा

ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाईजी के 8वें पुण्य स्मृति दिवस पर मीडिया परिसंवाद

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति सरोवर रिट्रीट सेंटर में संस्थान के मीडिया प्रभाग के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र.कु. ओमप्रकाश भाईजी के 8वें पुण्य स्मृति दिवस पर 'सामाजिक परिवर्तन के लिए जागरुक मीडिया' विषय पर आयोजित मीडिया परिसंवाद को सम्बोधित करते हुए

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बल्देव शर्मा ने कहा कि पत्रकार समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लोक जागरण और लोकोपकार करना मीडिया का प्रमुख कार्य है। उन्होंने कहा कि सजगता, निर्भयता, सत्यान्वेषण और मानवीय संवेदना, यह चार चीज़ें नहीं हो तो मीडिया मूल्यनिष्ठ न रहकर पूरी तरह से मूल्यहीन व व्यावसायिक हो जाएगा।

अनसोशल मीडिया से हो रहे अनेक फ्रॉड : सतीश श्रीवास्तव

नई दुनिया के समपादक सतीश श्रीवास्तव ने कहा कि मीडिया विचारों का श्रोत है। आज़ादी के आंदोलन में उसने जागरुकता फैलाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। किंतु आज सोशल मीडिया अनसोशल बन चुकी है। इससे अनेक फ्रॉड हो रहे हैं।

आज स्वनियमन की आवश्यकता है : प्रो. मानसिंह परमार

कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. मानसिंह परमार ने कहा कि संविधान ने पत्रकारों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार दिया है किन्तु आज स्वनियमन की आवश्यकता है तब ही हम सामाजिक परिवर्तन की ओर आगे बढ़ सकेंगे। धर्म हमें जीने का मार्ग बतलाता है। किन्तु अध्यात्म उस मार्ग पर चलना सिखलाता है।

समाज में जागरुकता फैलाना मीडिया की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी : ई.वी. मुरली

मीडिया दर्शकों को ऐसा कुछ न परोसे जिनसे समाज में विकृति आए : ब्र.कु. हेमलता दीदी

ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने कहा कि मीडिया द्वारा एकता, सद्भावना और सदाचार को सारे विश्व में फैलाया जा सकता है। मीडिया दर्शकों को ऐसा कुछ न परोसे जिनसे समाज में विकृति आए।

अंग्रेजी दैनिक हितवाद के सम्पादक ई.वी. मुरली ने कहा कि समाज में जागरुकता फैलाना मीडिया की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। जब सब लोग अध्यात्म से जुड़ेंगे तब ही सामाजिक परिवर्तन के कार्य में तेज़ी आएगी। आई.बी.सी. 24 न्यूज़ चैनल के सम्पादक रविकांत मित्तल ने भी अपने विचार रखे।

खबरपालिका पर लोगों का सबसे ज़्यादा भरोसा : मधुकर द्विवेदी

वरिष्ठ पत्रकार मधुकर द्विवेदी ने कहा कि ओमप्रकाश भाईजी मूल्यनिष्ठ मीडिया के जनक थे। उनका सदैव यह प्रयास रहा कि मीडिया मूल्यनिष्ठ बने। जब लोगों को कहीं न्याय नहीं मिलता है तब वह मीडिया के पास आता है। इससे साबित होता है कि आजकल लोगों का खबरपालिका पर सबसे ज़्यादा भरोसा है। रायपुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी ने कहा कि मीडिया में हम जैसा देखते, सुनते और पढ़ते हैं वैसा ही हम सोचने लगते हैं। मीडिया हमारी सोच को बदलने की ताकत रखता है।

सत्यता, विनम्रता, सेवा भाव जैसे गुणों द्वारा सम्बंध और व्यवसाय दोनों होंगे अच्छे

प्रभु वरदान भवन के 13वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में 'घर बने मंदिर' कार्यक्रम

भीनमाल-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ प्रभु वरदान भवन के 13वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित विशेष कार्यक्रम 'घर बने मंदिर' में परम पूज्य मुनिराज हितेश चंद्र विजय जी महाराज साहब ने कहा कि प्रत्येक घर के सदस्य को अपने अहंकार का त्याग कर स्वयं का परिवर्तन करना चाहिए। जितना स्वयं में सत्यता, विनम्रता, सेवा भाव जैसे गुण व्यवहार में आएंगे उतना हमारे सम्बंध और व्यवसाय दोनों अच्छे होंगे। सतत् अभ्यास और सत्संग से ही अहंकार दूर हो सकता है। जो झुकना जानता है वह स्नेही और जो झुकाना चाहता है वह अहंकारी है इसलिए पहले खुद झुकें तो अन्य को झुका सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. गीता बहन ने बदलते परिवेश में परिवार और समाज में आए हुए बदलाव का विस्तृत वर्णन करते हुए विशेष महिलाओं से आग्रह किया कि वह घर के वातावरण में सात्विक अन्न, सादगी, मधुरता का प्रयोग करें। आपने हर महिला से देवी स्वरूप में विचरण करने का आग्रह किया। इस अवसर पर डॉ. श्रवण मोदी ने परिवारों में तनाव और नशे की प्रवृत्ति को कम करने की बात कही। उन्होंने कहा कि आज वातावरण बहुत नकारात्मक है, ऐसे में कम से कम घर का वातावरण सभी को बहुत अच्छा बना कर रखना चाहिए। संस्थान के द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन के लिए उन्होंने हृदय से प्रशंसा की। ब्रह्माकुमारीज़ के रानीवाड़ा सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन ने शब्दों द्वारा सभी का स्वागत किया। संचालन मंडार सेवाकेन्द्र की संचालिका शैली बहन ने किया। इस अवसर पर दिव्यचन्द्र विजय म.सा., वैराग्य विजय म.सा, चन्दनबाला मोदी, शारदा देवी अग्रवाल, नरेन्द्र आचार्य, देवेंद्र भण्डारी, ओमप्रकाश खेतावत, नैनाराम चौहान, गुमान सिंह राव, राजू जैन, संदीप देवासी सहित अन्य भाई-बहनें भी मौजूद रहे।

इस मौके पर... सास-बहू के सम्बंध को मज़बूत करने हेतु बहु का गृह लक्ष्मी के रूप में श्रृंगार व पूजन कर मेल-मिलाप का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें सभी महिलाओं ने खुशी से भाग लिया और अपना अनुभव भी सुनाया कि हमें यह महसूस हुआ कि हमें घर में और अधिक प्रेम से रहना चाहिए और एक-दूसरे का ख्याल रखना चाहिए।

विश्व शान्ति के लिए अद्भुत भूमिका निभा रहा यह संस्थान : स्वामी धर्मदेव

ओआरसी-गुरुग्राम। भारत ने विश्व को जीवन जीना सिखाया, आध्यात्मिकता का मूलमंत्र दिया। उक्त विचार पटौदी,हरी मंदिर के महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज ने ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय श्रीमद् भगवद्गीता महासम्मेलन के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था मानव को देवता बनाने का श्रेष्ठ कार्य कर रही है और विश्व शान्ति के लिए अद्भुत भूमिका निभा रही है। महामंडलेश्वर दिनेशानंद भारती,हरिद्वार ने कहा कि ईश्वर कभी भी गर्भ से जन्म नहीं लेते। गीता का ज्ञान हमें विराट संसार से सूक्ष्म ईश्वर की तरफ ले जाने वाला है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था गीता ज्ञान के रहस्य को सम्पूर्ण विश्व में फैला रही है। इस अवसर पर महामंडलेश्वर स्वामी अभिषेक चैतन्य, स्वामी गणेशानन्द महाराज, स्वामी त्रिदंडी चिन्ना जीयर, रामाकृष्ण मिशन के स्वामी सर्वलोकानंद, उत्कल विश्व विद्यालय की पूर्व कुलपति मधुमिता दास, सोनीपत से आईं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन एवं जबलपुर से आईं डॉ. पुष्पा पाण्डेय ने भी अपने विचार रखे।

अखिल भारतीय भगवद्गीता महासम्मेलन का हुआ शुभारम्भ

ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में हुआ भव्य आयोजन

बड़ी संख्या में साधु, सन्त और महात्माएं हुए सम्मिलित

कर्म में अकर्ता भाव प्रकट करना ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी

महामंडलेश्वर स्वामी दुर्गेशानंद जी,गुरुग्राम ने कहा कि मनुष्य जीवन सर्वश्रेष्ठ है। अकर्ता भाव का अनुभव करना ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी है। कई बार जो जैसा दिखाई देता है, वैसा होता नहीं। इसी प्रकार दिखाई देने वाला संसार भी वैसा नहीं है। अज्ञान की स्थिति में हमें चीज़ें वैसी ही दिखाई देती हैं। आत्म ज्ञान के द्वारा ही सतयुग का उदय होता है।

धार्मिक और सांस्कृतिक भिन्नता के बावजूद भी भारत एक

युगांडा में भारत के उच्चायुक्त उपेंद्र सिंह रावत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ समूचे विश्व में शांति और सौहार्द का संदेश दे रही है। उन्होंने कहा कि धार्मिक और सांस्कृतिक भिन्नता के बाद भी भारत एक है। वास्तव में गीता सबको जोड़ती है। क्योंकि गीता एक सार्वभौमिक संदेश देती है। गीता एक आध्यात्मिक ग्रंथ है।

पवित्रता के आधार से ही की जा सकती है नूतन विश्व की संकल्पना

माउंट आबू से आईं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता ही ऐसा शास्त्र है, जिसमें भगवानुवाच लिखा है। गीता में परमात्म अवतरण की जो विधि बताई है, वो वास्तव में अलौकिक और विचित्र है। पवित्रता के आधार से ही नए विश्व की संकल्पना की जा सकती है। परमात्मा ही आत्मा को पवित्र बनने की शक्ति देते हैं।

कार्यक्रम के प्रति विशेष रूप से महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने शुभ कामना संदेश भेजा, जिसे राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने पढ़कर सुनाया।

गीता के ज्ञान से ही होगी सतयुग की पुनर्स्थापना

ब्रह्माकुमारीज़ के अति. महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि गीता शास्त्र वास्तव में भगवान द्वारा सुनाए गए ज्ञान का यादगार है। बहुत समय के बाद लिखे जाने के कारण गीता ज्ञान का भाव परिवर्तित हो गया। उन्होंने कहा कि गीता का ज्ञान निराकार परमात्मा शिव ने कलयुग के अंत में दिया। क्योंकि गीता ज्ञान से ही सतयुग की स्थापना हुई। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि हरेक को जीवन में सुख-शांति और पवित्रता चाहिए। जोकि परमात्म श्रीमत के सिवाए मिल नहीं सकती। गीता हमें यही संदेश देती है कि आत्मा स्वयं ही अपना मित्र और अपना शत्रु है। आत्म ज्ञान के द्वारा ही हम स्वधर्म में टिक सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. वीणा बहन ने किया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd Jan, 2024
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org